आरएनआई पंजीयन RAJHIN/2016/72902

डाक पंजीयन RJ/ UD/ 29-150/ 2017-2019

शब्द रंजन

संस्थापक एवं संरक्षक डॉ. महेन्द्र भानावत

विचार एवं जन संवाद का पाक्षिक

वर्ष 3 | अंक 23 | उदयपुर शनिवार 15 दिसंबर 2018 | पेज 8 | मूल्य 5 रू.

जैसाणे में डाक संचार हेतु हळकारे की भूमिका

-डॉ. पुरूषोत्तम छंगाणी-

पश्चिमी थार मरुस्थल के हृदय में बसी स्वर्णनगरी जैसलमेर (जैसाणा) के रियासतीकाल में सर्वत्र शिक्षा के नितांत अभाव के फलस्वरुप समाज में विशेषत: ग्रामीण समाज में चिट्ठी-पत्री, कागद आदि की लेखन परम्परा प्राय: नगण्य-सी रही है परन्तु, सेठ-साहूकार, बनिये आदि बीजक, बिल, हूंडी व नोटिस के दस्तावेजों का आदान-प्रदान किया करते थे।

इसकी मात्रा बहुत ही कम हुआ करती थी। राज के शासकीय प्रयोजनों के कतिपय कार्यों जैसे- पट्टे-परवाने, फरमान, राज्यादेश, सनदें, नूंत-बुलावों की डाक अवश्य तैयार की जाती थी। इन सभी की मात्रा इतनी न्यून होती थी कि रियासत स्तर पर डाक संचार की वृहद व्यवस्था स्थापित करने की न तो कोई आवश्यकता समझी गयी और न ही इस विषय को राज की प्राथमिकताओं में समाविष्ट किया गया।

जैसलमेर शहर (राजधानी) में डाक संचार व्यवस्था के लघु स्वरूप का अस्तित्व हर काल में परिलक्षित होता है, परन्तु गांव के लोगों को अपने संदेशों, समाचारों, कागद-पत्रों आदि को गंतव्य स्थानों तक पहुंचाने के लिए विवशत: प्रत्यक्ष मौखिक संवाद सिस्टम अपनाना पड़ता था जिसके लिए योग्य एवं विश्वसनीय संदेशवाहकों का निजी तौर पर जुगाड़ करना होता था। बड़े गांवों में कुछ बलिष्ठ व्यक्ति संदेशवाहक का कार्य कर जीविकोपार्जन किया करते थे। चूंकि यह निजी स्तर की प्रकीर्ण व्यवस्था थी, शायद इसलिए इसको कोई नाम नहीं दिया गया फिर भी, केवल रियासती काम-काज की आवश्यकताओं की पूर्ति के उद्देश्य से जैसलमेर में एक मर्यादित डाक संचार व्यवस्था प्रचलित रही है।

उसके अन्तर्गत डाक व मौखिक संदेश लाने-लेजाने के लिए राज की ओर से डाकियों के समरूप 'हलकारे' नियुक्त किये जाते थे। इस व्यवस्था को लोक-जीवन में 'हलकारी चाकरी' भी कहा जाता था। यह हलकारा शब्द संभवत: 'हरकारा' शब्द का ही अपभ्रंश है। विभिन्न इलाकों के 'हाकम' (क्षेत्र विशेष हेतु राज द्वारा नियुक्त सर्वोच्च प्रशासनाधिकारी) भी अपने हलकारे रखा करते थे। पहचान के लिए हलकारों को राजचिह्न और 'मेखला पट्ट' दिया जाता था ताकि कार्यवश आवागमन में उनकी सुरक्षा सुनिश्चित रह सके।

हलकारे राजप्रदत्त इन अलंकरणों को माथे से छुआ कर उन्हें पूरा सम्मान देते हुए बड़े गर्व और उत्साह से धारण कर प्रफुल्लित होते थे, इसलिए यदि कोई उनका अपमान करता था तो वह हलकारों के लिए पूर्णत: असहनीय था। समाज में उनका अच्छा रूतबा था, इसलिए वे जहां भी जाते थे यथोचित मान-सम्मान पाते थे।

यहां यह उल्लेख करना कोई असंगत नहीं होगा कि जैसलमेर के लोक-सांस्कृतिक रंग-रूपों, ऐतिहासिक घटना-प्रसंगों, जन-रूचियों, सामाजिक रीतिरिवाजों, परम्पराओं आदि की सागोपांग जानकारियों के प्रबल ज्ञाता स्वतंत्रता सेनानी श्री लालचन्दजी जोशी ने डाक संचारक इन हलकारों की लोकप्रियता की चर्चा के दौरान कभी एक बड़ी रोचक बात बताई थी कि शहर में जब कभी, कहीं भी, किसी भी व्यक्ति के यहां सहभोज होता था तो उसमें शामिल होने के लिए खास-खास हलकारों को मनुहार भरा निमंत्रण अवश्य दिया जाता था।

राजस्थानी भाषा, साहित्य एवं संस्कृति के मर्मज्ञ विद्वान डॉ. दीनदयाल ओझा ने कभी बताया था कि लाठी बजाते हुए हलकारों के आगमन पर भीड़ भी उन्हें खुशी-खुशी मार्ग देती थी। इसके अतिरिक्त, जैसलमेरी डाक व्यवस्था से जुड़े इन हलकारों की ख्याति एवं छवि की चमक इस तथ्य से भी उजागर होती है कि यहां के सुविख्यात लोककवि तेज ने अपनी गीति-नाट्य (ख्याल) कृति 'जोग भर्तृहरी का ख्याल' में मूल कथानक प्रारम्भ करने से पूर्व जिन चार महत्त्वपूर्ण सामाजिक पात्रों की काव्य-झांकियां ट्रेलर के रूप में प्रस्तुत की हैं उनमें हलकारे को भी सम्मिलित किया है।

जैसलमेर में डाक संचार हेतु जो व्यवस्था अस्तित्व में रही है उसके स्वरूप का परिदृश्य तथा समग्र संचालन विधि का क्रियान्वयन निश्चय ही सदा एक-सा नहीं रहा है। इसकी प्रकृति अत्यन्त लचीली देखने में आती है। यह तर्कसंगत विश्वास है कि इसमें परिवर्तन-परिवर्धन में राजाधिकारियों व राजाज्ञा की निर्णायक भूमिका रहती थी परन्तु, शनै:-शनै: व्यवस्था के सम्बन्ध में कतिपय परम्पराएं अंकुरित हो पनपने लगी थीं जिन्होंने इसके कार्यों आदि में बहुत-कुछ स्थायित्व का रंग भर दिया था।

उल्लेखनीय है कि डाक व्यवस्था के मेरूदण्ड कहे जाने वाले हलकारे इन परम्पराओं की प्राणवायु रहे हैं। ऐसा कहना कतई अतिशियोक्ति नहीं होगा कि हलकारों का क्रियाकलाप ही इस व्यवस्था का सटीक पर्याय था। सारांशत: यह कहा जा सकता है कि डाक व्यवस्था की छवि का यथासंभव पूरा दिग्दर्शन कराने के लिए प्रकीर्ण रूप से उपलब्ध उल्लेखों, लोकानुभवों तथा परम्पराओं से हस्तगत हुई विविध जानकारियों का आकलन होना चाहिए।

जैसलमेर में डाक (पत्रादि एवं मौखिक संदेश) हलकारों की तीन प्रमुख श्रेणियों का उल्लेख मिलता है। पहली श्रेणी थी ऊंटसवार हलकारों की। दूसरी थी घुड़सवार हलकारों की और तीसरी श्रेणी पैदल हलकारों की थी। इन तीनों श्रेणियों के हलकारों का कार्यक्षेत्र पृथक-पृथक हुआ करता था। ये हलकारे अपने-अपने क्षेत्र के भूगोल से भलीभांति परिचित हुआ करते थे। जो स्थान सुदूर बालू टीलों के मध्य बसे हुए थे अथवा जिन स्थानों तक पहुंचने के लिए लम्बे रेतीले मार्गों से गुजरना पड़ता था, वहां डाक ले जाने के लिए ऊंटसवार हलकारों की नितांत आवश्यकता रहती थी।

जैसलमेर रियासत का अधिकांश भाग बालू रेत से आच्छादित था, इसलिए ऊंटसवार हलकारों की संख्या सर्वाधिक थी। ऊंटसवार हलकारों की यात्रा के लिए ऊंट का प्रबन्ध प्राय: 'सुतरखाने' (ऊंटों का बाड़ा) से किया जाता था, परन्तु ऊंटों की साज-सज्जा का ध्यान हलकारे स्वयं रखा करते थे। ऊंटों के गले में चमड़े की पट्टी पर टांके हुए घुंघरुओं की माला (घुघरमाल) अनिवार्यत: बांधी जाती थी। इसकी आवाज हलकारों के आगमन की सूचना देती थी।

कुछ हलकारे घुंघरू वाली पतली चर्म पट्टी को ऊंटों के अगले पैरों में घुटने से कुछ ऊपर बांधते थे। इन ऊंटों की नकेल भी विशेष प्रकार की होती थी। ये सभी चीजें ऊंटसवार हलकारों की पहचान के परिचायक थे। यात्रा के दौरान ऊंटसवार हलकारों व उनके ऊंटों के ठहरने, खाने-पीने आदि की व्यवस्था का उत्तरदायित्व सम्बन्धित सामंती ठिकानों अथवा हाकमी ठिकानों का होता था। डाक लाने- ले जाने तथा लेने-देने की रसीद बनाने का कोई प्रावधान नहीं था, केवल विश्वास ही सर्वस्व था।

जैसलमेर में घुड़सवार (अश्वारोही) हलकारों की संख्या अपेक्षाकृत बहुत कम थी। जो गंतव्य स्थान पथरीले व पहाड़ी क्षेत्र में अवस्थित थे अथवा जहां तक पहुचने के लिए पथरीले दुर्गम मार्ग से यात्रा करनी होती थी वहां डाक ले जाने के लिए घुड़सवार हलकारों की आवश्यकता रहती थी। इसके अलावा दूसरी रियासतों की डाक सीमांचल के निर्धारित स्थानों तक ले जाने के लिए ऊंटसवार हलकारों की ऐवजी में कभी-कभी घुड़सवार हलकारों को भी भेजा जाता था। ये हलकारे दूसरी रियासत की डाक देकर और वहां से अपनी रियासत की डाक प्राप्त कर महकमे में जमा करा देते थे। उल्लेखनीय है कि एक सर्वत्र प्रचलित परम्परा के अनुसार कोई भी व्यक्ति ऊंट या घोड़े पर सवार हो कर गांव की हद में प्रवेश नहीं कर सकता था, परन्तु ऊंटसवार तथा घुड़सवार हलकारों को इसमें विशेष छूट थी।

जैसलमेर की डाक संचार व्यवस्था की विभिन्न गतिविधियों के संचालन में जिनकी भी योगकारी भूमिका रही थी उनमें पैदल हलकारों को अग्रगण्य माना जा सकता है। डाक के संबंध में इनके कार्यक्षेत्रों तथा कर्तव्यों के अनुसार इनको दो वर्गों में विभक्त किया जा सकता है।

पहला- शहरी क्षेत्र में डाक/संदेश वितरण करने हेतु नियुक्त पैदल हलकारे और दूसरा- ग्रामीण क्षेत्रों में भ्रमण कर डाक व संदेश बांटने वाले पैदल हलकारे। ध्यातव्य है कि हलकारे उन गांवों का भ्रमण नहीं करते थे जो ऊंटसवार हलकारों या घुड़सवार हलकारों के मार्गों में पड़ते थे। शहरी काम हेतु नियुक्त हलकारे बहुधा कोर्ट-कचहरी एवं दरबार में तैनात रहते थे और राज की डाक (सम्मन, परवाने, राज्यादेश आदि) तथा संदेश प्रजाजनों तक पहुंचाते थे। इस सम्बन्ध में तेजकवि कृत 'जोग भर्तृहरी का ख्याल' में हलकारा अपना परिचय इस प्रकार देता है-

भरे आम दरबार कचेड़ी, हाजर रहूं हमेस।
नहीं आवै हुजदार, उसको करता तुरत संदेस।।

बड़ी अजीबोगरीब बात है कि पैदल हलकारे अपने साथ एक ऐसी मोटी 'गेडी' (लाठी) रखते थे जिसका ऊपरी सिरा चांदी या पीतल या सफेद धातु के गोल टोपीनुमा खोल से मढ़ा रहता था। इसके नीचे लाठी की गोलाई में घूघरों (घुंघरुओं) की एक पट्टी स्थाई रूप से फिट कर दी जाती थी। इन घूघरों की आवाज बड़ी तेज व कर्णप्रिय होती थी।

-शेष पृष्ठ सात पर

पोथीखाना

जगदीश आकाश का काल चिन्तन

काल चिन्तन से पूर्व जगदीश आकाश की 'जोगिया हो जाय मन' प्रकाशित कृति को पाठकों ने खूब सराहा। काल चिन्तन एक सौ से अधिक चिन्तन प्रधान रचनाएं हैं। इनमें वर्तमान जीव-जगत के समक्ष आयी चुनौतियों की ओर संकेत है। सम्पूर्ण मानव जाति को बचाने का संकल्प है। 'सांस का सफर' में वे लिखते हैं- 'गति के असन्तुलन ने जड़ दिया है फिजा में श्मशानी सन्नाटा, खत्म कर दी है नैतिक मर्यादाएं। हम सब मिलकर तोडेंगे लंका के पूंजीवादी परकोटे को। आओ इस अनैतिक चेलैंज के खिलाफ युद्ध करें।'

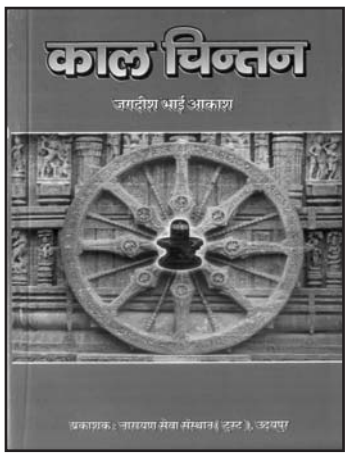

इन लेखों में केवल मनुष्य ही नहीं, सम्पूर्ण जीव-जगत, प्रकृति को बचाने का चिन्तन है। वे लिखते हैं- 'दुनियां के किसी कानून की किताब में क्यों नहीं लिखा, जीभ या सौन्दर्य वृद्धि के लिए, पेट से शौचालय के सफर के लिए क्यों लिये गए किसी के प्राण? मासूम परिन्दों की जान? क्या यह प्राणी मात्र के मूल अधिकारों का हनन नहीं? उन नराधमों के अन्त की जरूरत है जो घर आंगन की कोयल व कोमल किलकारियों को श्मशानी सन्नाटों में तब्दील कर रहे हैं। तभी प्रेमियों का साम्राज्य सृष्टि समृद्ध व आनन्दित करके देगा सत् चित्त आनन्द। इसी की खोज में मीरां, बुद्ध, महावीर, दयानन्द राजमहलों का वैभव छोड़ देते हैं। इनकी भी चिन्ता सृष्टि को सुन्दर बनाने की ही रही है।'

ये गद्य-लेख पत्र-शैली में लिखे गये हैं। कई तो सीधे 'मीत' सम्बोधन से है। मेरे मीत! घर वही है, गलियां वही है, दृश्य वही है पर पात्र बदल गये हैं। ज्यादातर में सम्बोधन न होते हुए भी गद्य-संवाद करते हुए लगते हैं-'मैं प्रेम संदेशा तुम तक कैसे पहुंचाऊं? इस मरुस्थल में एक भी कुरजा नहीं है जिसकी पांखों पर प्रेम संदेशा लिख भेजूं। इनमें रागात्मक सम्बन्ध है तो रोष भी है और पीड़ा भी। सुसुप्त स्वर में भावों के समन्दर की हिलोरें हैं तो सपनों की थाती है। जिन्दगी की जागीर और सपनों में पीड़ा, सोते-जागते पीड़ा। सपनों की पीड़ा क्या उमर भर सालती रहेगी? वक्त हमेशा एक सा नहीं होता 'समय के घोड़े' बेलगाम भागते हैं और 'हरित हरि' हो फिर झूमेगा कैलाश। नाचेगा जग में जगदीश।

काल चिन्तन के ये लेख चिन्तन प्रधान हैं। इनमें प्रवाह है, सरस काव्य है। लेखक मूलत: कवि है इसलिए उनका कवित्व इन लेखों में सर्वत्र झलकता है। जैसे प्यास के खोल दो सारे द्वार। आने को आतुर है गंगा की धार। और कोई उठा ही नहीं, झुक गया। कोई चला ही नहीं, रूक गया।

कुल 118 पृष्ठ की यह कृति 300 रूपया मूल्य लिये नारायण सेवा संस्थान, सेक्टर-4, हिरणमगरी, उदयपुर से प्रकाशित है। **- रामदयाल मेहरा**

गीता अनुवादिका गीतार्थ सुध बोधनी

श्रीमद् भगवतगीता एक ऐसा ग्रंथ है जिसकी सर्वाधिक व्यापकता है और जो न केवल भारत में अपितु पूरे विश्व में सर्वाधिक पहुंच लिये है। इसकी शाश्वतता और लोकप्रियता तो इसी से आंकी जा सकती है कि भारतीय विभिन्न भाषाओं में भी इसके श्रेष्ठ अनुवाद उपलब्ध हैं।

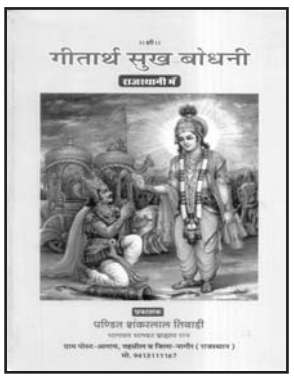

यह महत्वपूर्ण उल्लेखनीय पक्ष है कि राजस्थानी भाषा में भी इसके भांति-भांति के अनुवाद हुए हैं। खासियत यह है कि आजादी पूर्व राजस्थान विभिन्न रजवाड़ों में बंटा हुआ था। उनकी भाषाएं अपने-अपने अंचल की संस्कृति निधि की सूचक थीं। उनका विलीनीकरण होने के पश्चात भी वे वाणियां किंवा बोलियां मुखर रूप में विद्यमान होकर साहित्य की विशिष्ट पहचान लिये हैं। मेवाड़ी, वागड़ी, हाड़ौती, मारवाड़ी, शेखावाटी, ढूंढ़ाड़ी जैसी भाषाओं में अब भी सृजन की धार तीखी बनी हुई है।

अनुवाद का कार्य मूल लेखन से भी अधिक दुष्कर कहा गया है। अनुवादक का अनुभव, ज्ञान चिन्तन, मूल लेखक के भाव-चित्त का आशय तथा सामयिक परिवेश भी कई दृष्टियों से अनुवाद को तड़का देते हैं।

गीतार्थ सुख बोधनी के अनुवादक पं. शंकरलाल तिवाड़ी सधे हुए धर्मनिष्ठ पंडित प्रवर, भागवत भास्कर एवं ब्राह्मण रत्न हैं। उनका अनुभव जगत विशाल तथा गहन है। राजस्थान के नागौर जिले के ग्राम्यजीवी मन-मस्तिष्क के सामाजिक तथा धर्म-अध्यात्म के सुरूचि संत-भक्त के रूप में उनका अनुवाद राजस्थानी की नागौरी बोली का प्राधान्य लिये है।

भवानीशंकर व्यास के शब्दों में तिवाड़ीजी मीठी तथा मठोठदार भाषा ही नहीं, अनुवाद के रूपान्तरण में लय, प्रास, गति, छन्द, शब्दों की सींव, कसावट एवं तुकान्तता की मर्यादा भी एक उन्नत ठसक लिये है। पुस्तक का प्रकाशन स्वयं पं. शंकरलाल तिवाड़ी ने पारीक चौक, अलाय, जिला नागौर (राज) से किया है। पक्की जिल्द लिये दो सौ पृष्ठीय यह पुस्तक 200 रूपये में उपलब्ध है। **-डॉ. कहानी भानावत**

कला-पुरातत्व में श्रीराम की खोज

श्री ललित शर्मा प्राचीन भारतीय इतिहास, पुरातत्व, दर्शन एवं कला-संस्कृति के ललित अन्वेषक एवं गहन अध्येता हैं। अपने जन्मस्थल झालावाड़ के स्थापत्य तथा पुरातन समृद्ध संस्कृति को राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय पहचान दिलाकर उन्होंने दीया तले अंधेरे को चीर कर अपनी प्रज्ञा-प्रतिभा से प्रकाशित किया है। अपने सुविचारित लेखन द्वारा उन्हें अनेक सम्मान प्राप्त हैं।

प्रस्तुत पुस्तक 'कला एवं पुरातत्व में श्रीराम' में ललित शर्मा ने पुरातत्व, स्थापत्य, मूर्ति, सिक्के, चित्रांकन आदि में रामजनित परम्परा के ऐतिहासिक अनुशीलन कर राम की व्यापक लोकप्रियता पर साधार प्रकाश डाला है। पुस्तक के प्रारम्भ में ही अपने लेखकीय वक्तव्य में लेखक ने स्पष्टत: लिखा है - प्रस्तुत कृति में पुरातत्व, इतिहास एवं कला के मूल स्त्रोतों, मृद पट्टिकाओं, कलाचित्रों, मूर्तियों, मन्दिर स्थापत्यों, शिलालेखों एवं वहां प्रसारित श्रीराम कथा के अनुशीलन द्वारा जनमानस के वंदनीय भगवान श्रीराम का श्रद्धाभाव से स्मरण करते हुए कृति के लेखन, चिन्तन और प्रमाणों में पूर्णत: पारदर्शिता, सत्यता और वैज्ञानिक दृष्टिकोण का पूर्ण ध्यान रखने का प्रयास किया गया है।

पुस्तक के कुल आठ अध्यायों में प्राचीन पुरातात्विक कला, मूर्तिकला, दक्षिण-पूर्व एशिया के शिलाचित्रों, प्राचीन मुद्राओं, चित्रांकन परम्पराओं में राम की अवस्थिति को परखते हुए विश्वव्यापी लोकप्रियता में राम का बड़ा सुथराई से आकलन किया गया है। इसके साथ ही रामयुगीन ऐतिहासिक स्थानावली के सन्दर्भ में जो निष्कर्ष निकाले गए हैं उनका सिलसिलेवार जिक्र किया गया है। सभी स्थलों को इतिहास सम्मत स्थलों, घटना तिथियों एवं श्रीराम संवत की दृष्टि से विवेचित कर अन्तिम अष्टम अध्याय 'रहस्यमयी लीला में श्रीराम' का है। पर्यटन विकास समिति झालावाड़ (राज.) से प्रकाशित आठ पृष्ठीय यह पुस्तक 151 रूपये मूल्य की है।

- डॉ. तुक्तक भानावत

समकालीन विसंगतियों पर चुटीला प्रहार करती गज़लें

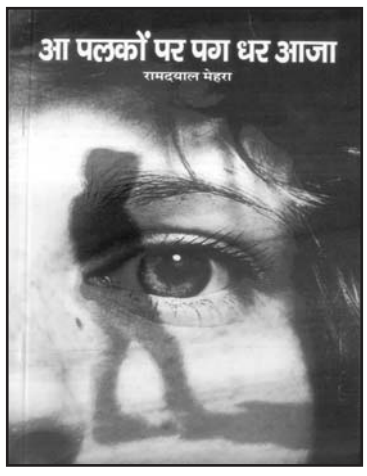

हिन्दी तथा राजस्थानी के जाने-पहचाने कवि गज़लकार रामदयाल मेहरा का यह सातवां गज़ल संग्रह है। इसमें संग्रहीत रचनाएं अपने सर्जनात्मक परिवेश, माटी तथा सांस्कृतिक सौरभ से अविच्छिन्न रूप से जुड़ी हुई तो हैं ही साथ ही ये अपने रचनात्मक कलेवर में राजनैतिक व्यवस्था, आर्थिक विषमता तथा सामाजिक विसंगतियों को भी गंभीरता, बेबाकी तथा प्रभावशीलता के साथ व्यक्त करती हैं।

यही नहीं, व्यक्तिपरक अनुभवों तथा अनुभूतियों के साथ-साथ इनमें व्यष्टिपरक अनुभव, पर्यवेक्षण क्षमता तथा सूक्ष्म रचनादृष्टि की विद्यमानता भी पाठक को प्रभावित करने में सक्षम है। यथा-

कल हमसे नाराज लगे वो
बिन बोले चुपचाप गये वो।
साथ रहे पर खामोशी थी
कुछ ना मन की बात कहे वो।
दोष हमारा ना था फिर भी
दोषी हमको मान रहे वो।
उनके आने का खत पढ़ते
लगता जैसे पास खड़े वो।

इस उदाहरण से रामदयाल के रचनाकार मन की पीड़ा तथा वेदना को आसानी से समझा जा सकता है और यह भी कि भाषा के प्रयोग को लेकर यह रचनाकार कितना सजग एवं सतर्क नजर आता है।

इन गज़लों को पढ़ते हुए हमारा ध्यान इस ओर भी जाता है कि अधिकांश रचनाओं की अन्तर्वस्तु समकालीन परिवेश से सम्बन्धित है। इसमें जितना, जिस सीमा तक गांव उपस्थित है, उतनी ही और उसी सीमा तक शहरी जीवन की अनुगूंजें भी सुनाई पड़ती हैं। इसका सीधा सा अर्थ यह भी हुआ कि शहर में लम्बे अर्से तक रहने के बावजूद रचनाकार का मन गांव, बचपन, घर-परिवार, सामाजिक परिवेश और स्मृतियों के फलक पर सक्रिय दिखाई पड़ता है। यह एक सीधे-सादे भारतीय मन की संवेदनात्मक साक्षी का उल्लेखनीय उदाहरण कहा जाना चाहिये।

शहरी चकाचौंध, जीवन की कृत्रिम शैली तथा बाजारीकरण की अंधी दौड़ के बावजूद कवि का मन प्रीत की संवेदना, वियोग की चेतना, जीवन में प्रेमत्व की सक्रियता तथा प्रभावशीलता के प्रति बेहद समर्पित रहता है। एक जगह वे लिखते हैं-

पाकर के स्पर्श तुम्हारा
सोया तन मन जगा दुबारा।
मानो या ना मानो तुम बिन
है मुश्किल में गुजर हमारा।
चाहत मुक्त की होती पर
छूटे ना ये मोह तुम्हारा।
बैठ जहां पर हम बतियाते
याद करे वो घर चौबारा।
तुमको पाने के ही खातिर
छोड़ दिया है ये जग सारा।

गज़लकार रामदयाल मेहरा प्रसिद्धि तथा प्रचार की भागदौड़ से दूर रहकर स्वांत: सुखाय रचना करने में विश्वास करते हैं। काव्य भाषा के मर्म को समझने की परिपक्व दृष्टि ; विषय वैविध्य की मौजूदगी होने ; गज़ल की कारीगरी से वाबस्तगी होने तथा भाषा की सांकेतिकता, संवेदनात्मकता तथा बिम्बपरकता की समझ-बूझ होने से संग्रह की पठनीयता, सम्प्रेषणीयता तथा अर्थवत्ता बढ़ जाती है। यह रचनाकार की दीर्घकालीन अभ्यास-प्रवृत्ति की परिचायक है।

कुल मिलाकर प्रस्तुत संग्रह की गज़लें हमारे मौजूदा समय की तमाम धड़कनों एवं गूंजों-अनुगूंजों को अभिव्यक्त करते हुए समकालीन जीवन की समस्त विडम्बनाओं, विसंगतियों तथा दंभ की मानसिकता पर चुटीला प्रहार करती हैं।

- डॉ. कुंदन माली

ईमानदार बेईमान

जीवन में कभी-कभी ऐसे अवसर भी आते हैं जब ईमानदार रहना चाहते हुए भी नहीं रह पाते हैं और मजबूरी ऐसी आन पड़ती है कि बेईमानी का रास्ता अपनाने को बाध्य होना पड़ता है।

घटना बहुत पुरानी है जब मैं गोदावत जैन गुरुकुल, छोटीसादड़ी द्वारा उदयपुर के विद्या भवन में बी. एड. करने आया था। स्टेशन से विद्या भवन तांगे में गया था। वहां जाकर मुझे यात्रा व्यय का बिल बनाना था। मैं अपने बिल में वास्तविक राशि जो खर्च हुई थी वही भरना चाहता था किन्तु मुझे पता चला कि अन्य साथियों ने तांगा भड़ा अधिक भरा था।

मैं उनसे कतई सहमत नहीं था किन्तु उनसे असहमत हुए अपनी किरकिरी भी नहीं कराना चाहता था। स्याणा कागला बनने वाली कहावत भी मैंने सुन रखी थी सो सबके साथ रहना ही मैंने उचित समझा। आज भी जब कभी उस घटना की याद हो आती है तो मेरा मन मुझे बुरी तरह कचोटता है किन्तु पीठ भी थपथपाता है कि मैंने समय और परिस्थिति देख जो उचित था, वह किया। उसके बाद बड़ी सरकारी सेवा में रहते हुए कभी मैंने वैसा काम नहीं किया।

-जैसा अहमदाबाद से सागरमलजी बीजावत ने बताया

खोज-खबर

नायण जिसने चूड़ैल का जापा किया

पिछले दिनों अपने गांव कानोड़ गया तो बातचीत के दौरान एक अजीब किस्सा सुनने को मिला। लगभग सौ वर्ष पूर्व यहां की एक नायण को रात को एक व्यक्ति ने आकर जगाया। उसके किंवाड़ खटखटाने पर नायण ने किंवाड़ खोले तो उससे तत्काल एक महिला का जापा करवाने की बात कही। नायण का तो काम यही था और इस काम के लिए उसे प्राय: हर समय ही तैयार रहना पड़ता था। उस व्यक्ति के कहते ही नायण तैयार हो गई। आगे-आगे वह व्यक्ति और पीछे-पीछे नायण।

उस भीमकाय अंधेरी रात में नायण एक जंगल में ले जाई गई जहां एक चूड़ैल से उसका पाला पड़ा। उस चूड़ैल के दांत आगे निकले हुए थे। आगे के पांव का फब्बा पीछे की ऐड़ी की तरफ मुड़ा हुआ था। बड़े-बड़े स्तन पीठ पर डाले हुए थी। नायण ने डरते-डरते जापा करवाया। पारिश्रमिक के रूप में उस व्यक्ति ने उसे सूप भर हड्डियां दीं जिसे नायण ने अपने आंचल में ग्रहण की। लौटते वक्त वही व्यक्ति उसे पहुंचाने आया।

नायण सारी स्थिति भांप गई। हड्डियों का बोझ जब उससे सहा नहीं गया तो वह चुपचाप एक-एक हड्डी रास्ते में फेंकती चली और अन्त में कुछ हड्डियां बच गई जिसे उसने अपने घर के कोठे में लाकर डाल दीं। पहुंचाने आया व्यक्ति उसे घर तक छोड़ चला गया। जाते वक्त नायण ने देखा, वह व्यक्ति एकदम कोई तीस फुट ऊंचा हो गया और वहां से दौड़ता हुआ भागा। नायण को यह समझने में कोई देर नहीं लगी कि वह भूत ही था।

कई महीनों तक तो नायण ने डर के मारे इस घटना का किसी के सामने जिक्र तक नहीं किया पर बाद में उसकी यह बात सारे गांव में फैल गई। नायण भय के मारे कई दिनों तक अस्वस्थ भी रही। उसकी मृत्यु के बाद जब उसकी बहू ने उस कोठे को खोला तो अन्दर से सोना निकला। कहते हैं कि जो हड्डियां उस नायण ने कोठे में डाली थी वे ही सोने के रूप में बदल गई। इस धन से नायण का बेटा निहाल हो गया और उसने नया अच्छा मकान बनवाकर आराम से जिन्दगी व्यतीत की।

कहां गई सावण की डोकरी

सावण माह में जब बरसात की हल्की सी फुहारें धरती को नम बना देती हैं तब कई तरह के छोटे-मोटे जीव दिखाई देते हैं। इनमें गहरी लाल ललाई लिये गरगलें, मखमल सी लालस्यूं चरबोटी तथा अपनी गोलाई में लिपटी गून्दी बचपन में मैंने बहुत देखी। गरगलों का तो पूरा समूह हिलता-सरकता देखा करता। सैंकड़ों की संख्या में गरगलें होतीं। ऊंगली के दो टेप्पे जितनी बड़ी गरगलें अनेक पांवों लिए होतीं। चलतीं जैसे रेल चल रही है। गून्दी को हम बटन भी कहते। उसके मुंह पर काला छोटा सा एन्टीना होता। यह पुरानी चाल के चार छिद्र वाले लोहे के बटन जैसी होती।

इन सबसे भिन्न सावण की डोकरी बड़ी कलात्मक, आकर्षक और छुईमुई सी हल्की-फोरी होती। यह प्राय: अकेली होती। कभी-कभी हम भीगी बालू रेत में अपना पांव घुसाकर जो घर बनाते उसमें इस डोकरी को छोड़ देखते रहते। राजस्थान में कहीं-कहीं इसे ममोल्या भी कहते। कोमल हथेलियों और छोटे-छोटे टाबरों की उपमा ममोल्यों से देने के प्रसंग भी मिलते हैं। इस जीव को हिन्दी में वीर बहूटी, वीर वधूटी, इन्द्र वधू तथा अंग्रेजी में रेड वेल्वेटी माइट कहते हैं।

यह सुबह सूरज की सौंधी किरणों के साथ मिट्टी से निकल आती है और उन्हीं किरणों के साथ सांझ होते-होते जमीन में चली जाती है। इसका पूरा शरीर लाल अत्यन्त ही कोमल मखमली बालों से ढका रहता है तथा पांव सफेद रेशमी बालों जैसे हल्के और खूबसूरत होते हैं। संवेदनहीन लोगों द्वारा इस सुन्दर सुकोमल जीव का बिना किसी आधार के कुछ औषधियों में उपयोग करते सुना गया पर पिछले दो दशकों में तो अब यह वधूटी, गरगलों का समूह और वह बटन-गून्दी भी देखने को नहीं मिली।

डॉ. वैदिक सम्मानित

इटावा हिंदी सेवा निधि के भव्य कार्यक्रम में उत्तराखंड की राज्यपाल श्रीमती बेबी रानी मौर्य डॉ. वेदप्रताप वैदिक को 'अटल बिहारी वाजपेयी' सम्मान प्रदान करते हुए।

गांव-गांव गोगामेड़ी वाले गोगा

राजस्थान के प्रमुख देवताओं में देवनारायणजी, तेजाजी, कल्लाजी तथा गोगाजी सर्प देवता के रूप में जाने जाते हैं। इनके देवस्थान-देवरों में जहां-जहां भी इनकी प्रतिष्ठा मिलेगी वह सर्प रूप में, सर्प की खोल में मनुष्याकृति अथवा उनकी आकृति के साथ सर्प का अंकन मिलेगा। यह कहीं माटी की, कहीं प्रस्तर की तो कहीं काष्ठ की प्रतिमा में दरसाव लिये होगा।

तीर्थंकर पार्श्वनाथ नौ फणी सर्प तथा कल्लाजी राठौड़ पंच फणी सर्प लिये हैं। कपड़े पर देवनारायणजी का चरित अंकित करा भोपा दम्पती उसके सम्मुख विशिष्ट गायन-वाचन द्वारा रात्रि को प्रदर्शन करते हैं वह फड़ अथवा पड़ चित्राम के नाम से जाना जाता है। गोगा नवमी पर गोगाजी को मानने वाले हरिये पतले गोबर से गोगाजी के अंकन अपने घर की दीवाल पर करते हैं। मारवाड़ में इनका प्रचलन अधिक देखने को मिलेगा।

गोगाजी को हिन्दू-मुसलमान दोनों मानते हैं जैसे रामदेवजी को मानते हैं। मुसलमानों में रामदेव रामापीर के रूप में और गोगा जहरपीर के रूप में आदरित हैं।

प्रतिवर्ष गोगामेड़ी में भाद्र शुक्ला नवमी को गोगाजी की समाधि पर विशाल मेला लगता है। यह दिन गोगा नवमी के नाम से जाना जाता है। इस दिन समाधि-स्थल पर पुजारी के रूप में एक हिन्दू और एक मुस्लिम खड़े रहते हैं। यों सावणी पूर्णिमा से लेकर भादवी पूर्णिमा तक पूरे माह ही यहां भक्तों का आवागमन रहता है। लाखों लोग गोरखनाथ के टीले तथा गोगा स्थल पर मत्था टेकते हैं और छड़ियों की पूजा करते हैं।

गोगामेड़ी में एक ऊंचे टीले पर मस्जिदनुमा गोगा मन्दिर बना हुआ है। इसकी मीनारें मुस्लिम स्थापत्यकला की प्रतीक हैं। मुख्य द्वार पर बिस्मिला लिखा हुआ है। मन्दिर के मध्य में गोगाजी की मजार है।

प्रसिद्धि है कि फिरोजशाह तुगलक अपनी सेना साहित सिंध प्रदेश को जीतने हिसार के रास्ते जाते हुए गोगामेड़ी ठहरा था। रात में उसने एक चमत्कारी दृश्य देखा जिसमें मशालें लिए घुड़सवार आ रहे हैं। उसके साथ आए विद्वानों ने कहा कि कोई महान हस्ती यहां आई है जो प्रकट होना चाहती है। इस पर लड़ाई से लौटने के बाद वहां मस्जिदनुमा मन्दिर बनवाया। यह घटना संवत् 362 की कही जाती है।

विभिन्न प्रदेशों से पीले वस्त्रों में जो गोगा-भक्त यहां आते हैं। उन्हें पूरबिये कहते हैं। कई लोग अपने में गोगाजी की छाया लाते, नृत्य मुद्रा में शरीर पर सांकलों का वार करते समाधि-स्थल पहुंचते हैं। वहां नारियल बताशे का चढ़ावा चढ़ाकर मनौती पूरते हैं।

चुरू जिले के ददरेवा गांव में गोगाजी का जन्म हुआ। भक्त वहां पहुंचकर धोक लगते हैं। अखाड़े में जातरू गोगाजी की यश-गाथा का गान करते हैं। डेरू व कांसी के कचौले की धुन पर भक्त अपने में गोगाजी की छवि लिए सिर तथा पूरे शरीर पर लोहे की सांकलें मारता है।

कहा जाता है कि गोरखनाथ एक बार गोगामेड़ी के टीले पर भाव लिये तपस्या कर रहे थे। गोगाजी की मां बाछल उनकी शरण में गई और पुत्र-प्राप्ति का वरदान लिया और कहा कि जब उनकी तपस्या पूरी हो जाय तो ददरेवा जाकर प्रसाद देंगे। उससे उसे संतान की प्राप्ति होगी।

तपस्या पूरी होने पर गोरखनाथ बाछल के महल पहुंचे। उन्हीं दिनों बाछल की बहिन काछल आई हुई थी। उसने गोरखनाथ से प्रसाद ले चखा जिससे वह गर्भवती हो गई। पता चलने पर बाछल गोरखनाथ की शरण में गई और कहा कि प्रसाद लेने पर भी फल नहीं मिला।

गोरखनाथ बोले, मेरा आशीर्वाद कभी निष्फल नहीं होता। उन्होंने गूगल नामक फल दिया जिससे वह गर्भवती हुई और भादवी नम को गोगाजी का जन्म हुआ। गूगल के कारण गोगा नाम रखा गया। ददरेवा में गोगाजी के घोड़े का आज भी वही अस्तबल और रकाब विद्यमान है। गोरखनाथ का आश्रम भी है।

जावर में हिरणाकुश का किला

बहुत सारी घटनाएं कब कहां कैसे घटीं, उनका सिलसिलेवार कोई इतिहास पकड़ में नहीं आता किन्तु लोक में कण्ठ-दर-कण्ठ जो बातें गीतों-कथाओं, कहावतों-मिथकों के माध्यम से जीवन्त हुई मिलती हैं वे ही उसके मूल तक साक्षी बनकर पहुंचने में सहायक होती हैं।

होली का त्यौहार पूरे देश में मनाया जाता है किन्तु उसके साथ जो कथा सुनने को मिलती है वह कहां घटित हुई, कोई नहीं बता सकता। मेवाड़ में उदयपुर के पास जावरमाला की पहाड़ियों का परिक्षेत्र अत्यन्त प्राचीनकाल में बड़ा उन्नत था। जावर की खदानों से जस्ता और चांदी निकालने के प्रमाण तो बहुत पुरातन काल से हैं। आज भी उसकी वही स्थिति है।

यह क्षेत्र पूरे विश्व में प्रसिद्धि लिये था। सतयुग में तो यह बड़ा आबाद रहा। जावर तब राजधानी था और यहां का किला बहु प्रसिद्धि लिये रहा। पूरा शहर किले पर आबाद था। यों यह पूरा क्षेत्र ही अपने लम्बे फैलाव के कारण विविध गढ़-गढ़ैयों तथा रणबांकुरों की दृष्टि से दूर-दूर तक पहचाना रहा। चित्तौड़, कुंभलगढ़ के किले आज भी अपने खंडहरों के कारण उस काल के वैभव को कहते नहीं थकते।

ऐसा ही गढ़-किला जावर का रहा। सभी किलों की तरह यह किला भी ऊंची पहाड़ी पर अवस्थित था जो अब वहां आसपास बसे ग्रामीणों की जबान पर हिरण्या मगरी उस पहाड़ी को और उस पर बिखरे-छितरे खंडहर को हिरणाकुश रो कल्लो नाम चढ़ा हुआ है जिसका अर्थ रिण्यकश्यप का किला से लिया जाता है।

प्रसिद्धि है कि किले का फैलाव काफी बड़ा और ठोस मजबूती लिये था। यह किला तीन बार बना और उजड़ा। प्रहलाद ने यहीं पर गुफा में विष्णु की आराधना की थी। इसे पेलाद गुफा भी कहा जाता है। कहा जाता है कि महाराणा लाखा के समय 14वीं शताब्दी से ही जावर की खदानों से धातु अयस्कों के उत्खनन और वहीं मिट्टी की मूसों में प्रदावित कर चांदी और यशद प्रपत्ति के प्रयास शुरू हो गये थे जो महाराणा रायमल (1472-1508) तक बड़े प्रभावी रूप में रहे।

22 जुलाई 1971 को इस किले की मैंने परिक्रमा की तथा खंडहरों में कुछ देर विश्राम किया। वहां कई ग्रामीणों से मेरी पूछताछ हुई। मीणा-भीलों की बसावट जैसी उस काल में रही, आज भी देखने को मिलती है।

कहा जाता है कि द्वापर युग में पांडवों ने यहां अज्ञातवास भोगा। यहां रमाकुण्ड के पास भीमपाल सील को पांडु-पुत्र भीम से सम्बन्धित बताया जाता है। राणा प्रताप ने तो कई जगह अज्ञातवास किया। यहां भी किया कहा जाता है। किले की मजबूती और भव्यता का अन्दाजा तो इसके परकोटे को देख कर लगाया जा सकता है जिसकी दीवारें ही पांच से छह फीट तक की चौड़ाई लिये हैं। जर्जर हालत में जो द्वार बचा हुआ है उसी को किले का मुख्य द्वार बताया जाता है। यह बड़ी मजबूती से रहते आज भी अपनी पहचान बनाये है। अधर-उधर बिखरी मूर्तियों के अवशेष यहां मन्दिर होने का प्रमाण देते हैं।

मुख्य बात तो यह है कि यहीं पर होलिका ने प्रहलाद को गोद में लेकर अग्नि स्नान किया था। इसमें प्रहलाद तो बच गया और होलिका बुरी तरह झुस गई तब यहां के निवासियों ने उस होली को बचाया था किन्तु उसके पूरे शरीर पर फफोले उठ आये थे। होली के उसी रूप में इधर होलिया वृक्षों की घनी तादाद मिलती है। इसे सेमल वृक्ष कहते हैं। इस वृक्ष की खासियत यह है कि इस पर हर जगह फफोलेनुमा कांटे होते हैं। इसी को होली रूप में जलाया जाता है।

मजेदार बात यह है कि इस होली को पूरी नहीं जलाई जाकर आधी-अधूरी अवस्था में उखाड़कर पानी में ठण्डी कर दी जाती है। इससे स्पष्ट है कि हिरण्यकश्यप की बहिन के प्रतीक रूप में ही उस होली की स्मृति को अक्षुण्ण रखने के लिए यह त्यौहार मनाया जाता है। इसके लिए पूर्व में महीने भर से बालिकाएं होली माता के लिए गोबर के बडुल्ले बनाकर उनकी मालाएं तैयार करती हैं और होली को पहनाती हैं। ये बड़ल्ले होली के सिणगार रूप में इनमें पांच कापड़े, पांच तिकोने, हथपान, रखड़ी, कंघी, तमण्या, चूड़ी, पांच सिंघाड़े, पांच सुपारी, पान, जीभ, टणका, नेवरी टोकर तथा सौलह छोटे-छोटे गोल बडुल्ले होते हैं।

शब्द रंजन

उदयपुर, शनिवार 15 दिसंबर 2018

सम्पादकीय

जनता, दीपक का प्रकाश और चुनाव

दीवाली से पूर्व शुभ कामना के लिए लिखा गया वल्लभ विद्यानगर से डॉ. भूपतिरामजी साकरिया का पोस्टकार्ड तीन राज्यों- राजस्थान, मध्यप्रदेश तथा छत्तीसगढ़ में हुए चुनाव के बाद मिला। उसमें छोटा सा दीया छोटी-छोटी सात काव्य पंक्तियों में बड़ी बात कह कर बड़ा सन्देश दे रहा है। कह रहा है-

'अमावस रो / घोर अन्धारो / म्हूं नानकड़ो / दीवो / नी हारूं / बळूं / प्रकाश करूं।'

तीनों राज्यों में सत्ता परिवर्तन से दीपक का कथन सामान्य से विशिष्ट अर्थ का द्योतक हो गया है। यहां महाकवि प्रसाद के नाटक की प्रारम्भिक पंक्ति भी दस्तक देती कह रही है- 'अधिकार सुख कितना मादक और सारहीन होता है।' बच्चों का घोड़ी चढ़न्या खेल भी याद आ रहा है जब घोड़ी पर बैठे बच्चे को दूसरा बच्चा, 'उतर भीखा म्हारी बारी' कहकर उसे घोड़ी से उतार उसकी जगह स्वयं सवारी करता पाया जाता है।

यह चलाचली का खेल हर समय, हर जगह होता रहता है। इसे समझकर समझदारी से चलने वाला पिटता नहीं है पर कहते हैं, अधिकार का, हुकूमत का, बड़े होने का नशा ही कुछ और होता है। फिर राजनीति का नशा तो सब नशों में भारी होता है। हाथ कांपने और गर्दन हिलने पर भी यहां राजनेताओं ने अपनी कुर्सी नहीं छोड़ी है।

इसीलिए दीवाली का वह नन्हा-सा दीपक बड़े आत्मविश्वास के साथ अपने स्वाभिमानी संकल्प में जीता हुआ अलमस्त है। चुनावों में ऐसे बांके-जोधे भी आते हैं जो स्वयं जीतने की उम्मीद नहीं रखते पर सामने वाले को हराकर सुखी होना चाहते हैं। यहां एक पुराना काव्य-कथन याद आ रहा है-

सज्जन पराया बाग में दाख तोड़ फल खाय।
अपनो कुछ ना बिगड़ है (पण) असही सह्यो न जाय।।

ऐसे लोगों को क्या कहिये और उन लोगों का भी जो पहली बार गांव से चलकर शहर की एक शादी में आए। अच्छे सजे-धजे बाग में प्रवेश करते ही उनकी निगाह सलाद पर पड़ी। बुजुर्ग ने अपने साथियों से कहा- 'यहां तो अभी सब्जी की तैयारी चल रही है। ककड़ी, टमाटर, गाजर, प्याज कटे पड़े हैं, पता नहीं सब्जी कब बनेगी?' देखते-देखते सभी लोग अपने गांव लौट गए।

संजय को जार द्वारा 11 हजार का चिकित्सा सहयोग

उदयपुर। जर्नलिस्ट एसोसिएशन ऑफ राजस्थान जार की उदयपुर इकाई की ओर से शनिवार को जार सदस्य संजय खोखावत को 11 हजार रूपये की आर्थिक चिकित्सा सहायता प्रदान की गई। संजय गत दिनों सड़क दुर्घटना में गम्भीर घायल हो गये थे। अस्पताल में जांच के दौरान पता चला कि उनके बायें हाथ की कोहनी की बोल बिखर गई है। उनके परिजनों ने अपने स्तर पर उनका उपचार करवाया लेकिन उसके लम्बा चलने से उन्हें आर्थिक समस्या आ रही थी।

खोखावत को जार उदयपुर की ओर से उपाध्यक्ष अजयकुमार आचार्य, कोषाध्यक्ष अल्पेश लोढ़ा, प्रचार सचिव भूपेन्द्रकुमार चौबीसा ने अध्यक्ष डॉ. तुक्तक भानावत की उपस्थिति में 11 हजार रूपये का चैक प्रदान किया। डॉ. भानावत के अनुसार जार प्रदेशाध्यक्ष नीरज गुप्ता ने भी 7500 रूपये की चिकित्सा सहायता उपलब्ध कराई है।

डॉ. दिनेश अभिनंदन ग्रंथ 'दिनेशायन' लोकार्पित

बहुआयामी साहित्यकार डॉ. रामगोपाल शर्मा 'दिनेश' को उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाशित अभिनन्दन ग्रंथ 'दिनेशायन' 25 नवम्बर 2018 को जयपुर में भेंट किया गया।

ग्रंथ के सम्पादक प्रो. रामलक्ष्मण गुप्त ने बताया कि समारोह के मुख्य अतिथि कर्नाटक एवं केरल के पूर्व राज्यपाल त्रिलोकीनाथ चतुर्वेदी, अध्यक्ष राजस्थान के पूर्व राज्यपाल नवरंगलाल टिबरेवाला, विशिष्ट अतिथि राजस्थान विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. आर. के. कोठारी, डीआईजी प्रसन्न खमेसरा ने ग्रंथ लोकार्पित किया। समारोह में स्थानीय

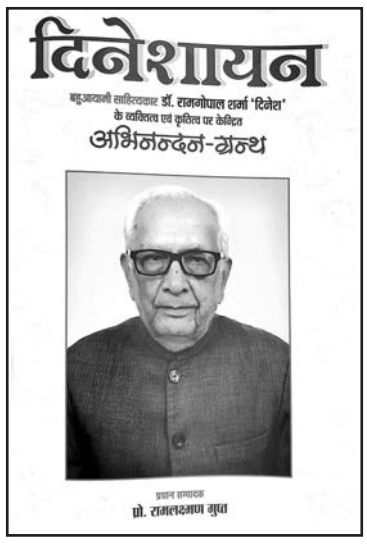

तथा बाहर के अनेक विद्वान एवं साहित्य-प्रेमी उपस्थित थे।

डॉ. दिनेश का अभिनन्दन कर साहित्य-प्रेमियों एवं विद्वानों ने साहित्य, शिक्षा एवं सामाजिक, सांस्कृतिक, राष्ट्रीय सेवाओं के लिए डॉ. दिनेश के प्रति कृतज्ञता प्रकट की। 'साहित्य अमृत' के सम्पादक त्रिलोकीनाथ चतुर्वेदी ने डॉ. दिनेश की साहित्य-सेवाओं पर विस्तार से प्रकाश डाला।

डॉ. चन्द्रपाल शर्मा एवं डॉ. आनन्दमंगल वाजपेयी ने डॉ. दिनेश की साहित्य-सेवाओं के साथ अपनी पुरानी आत्मीयता को स्मरण किया। अभिनन्दन समिति के अध्यक्ष डॉ. रामशरण गौड़ ने हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापित की।

1954 की विदाई की याद

मेरे सहपाठी एवं मित्र डॉ. नरेन्द्र भानावत के अनुज डॉ. महेन्द्र भानावत ने मुझे 'शब्द रंजन' भेजना प्रारम्भ किया है। 15 नवम्बर 2018 के अंक में प्रकाशित गुरुदेव सागरमलजी बीजावत की सुन्दर हस्तलिपि में 'हे तरुण साहित्यकार' सम्बोधन के साथ महेन्द्र को 1954 में छोटीसादड़ी गुरुकुल से विदाई दी गई। आशीर्वादात्मक शुभकामना के साथ हाई स्कूल की ओर से ध्यान आकृष्ट हुआ। सन् 1952 में डॉ. नरेन्द्र के साथ हाई सकूल की परीक्षा में बीस साथियों में से पांच पास होने वालों में मैं बनवारी दत्त जोशी भी एक था। तीन अन्य थे- अमृत मूणत, सुशील पोखरना और शान्ति पोखरना। सप्लीमेन्ट्री में शान्तिलाल लोढ़ा, सुरेन्द्र वया और विपिन जारोली थे जो बाद में उत्तीर्ण हो गये।

'पूत के पग पालणे' वाली कहावत महेन्द्र पर लागू हुई। उदयपुर के भारतीय लोककला मण्डल में रह लोककला एवं कलाकारों के खोजी शोधकर्त्ता के रूप में उन्होंने अपना विशिष्ट स्थान बनाया। श्री सागरमलजी बीजावत का मैं भी प्रिय छात्र रहा। उनके दिये हुए चरित्र प्रमाण पत्र से मैं रेलवे सेवा में पहुंचा। आज भी मैं उनका आशीर्वाद प्राप्त करता रहता हूं। उन बीस छात्रों में से अब 6-7 ही जीवित हैं।

गुरुकुल के दिनों में मैं हास्य कलाकार के रूप में उभरा। कवि दरबार में 'कवि गड़बड़' बना। कर्मवती नाटक में मैंने भीलराजा का अभिनय किया। गाड़िया लौहार का सांग कई दिनों तक चर्चा में रहा। शनिवार की सभा में मैं अपने गुरुवर्ग की नकल करता सबको लोटपोट कर देता। प्रधानाध्यापक नेमिचन्दजी सुराणा, हिन्दी अध्यापक शोभाचन्दजी वया, बीजावत साहब बहुत खुश होते और मुझे शाबाशी देकर मेरा मान बढ़ाते।

गुरुदेव शेषमलजी चोरड़िया द्वारा सिखाये गये हंसने के विभिन्न प्रकारों से आज भी मैं लोगों का खासा मनोरंजन करता हूं। सुराणा साहब के सम्पर्क में मैं अन्त तक रहा। शोभाचन्दजी वया का तो मैं इन्टरमीजियट परीक्षा में सहपाठी भी बना। गुरुदत्तजी शर्मा के लिए तो मैं जमूरा जैसा था।

स्मृतियों के शिखर (63) में चन्दरी बुआ के माध्यम से महेन्द्र ने उस काल का जीवन्त वर्णन किया है। आज की पीढ़ी के लिए वैधव्य में प्रयुक्त काले कपड़े और लम्बी बाहों की कांचली अकल्पनीय है। ओवरा, गवाड़ी पिरोल (मेवाड़ में पौर या पौळ) धुंवास्या, भंडारिया, भरतिया, बारलेसेर, जावणियां आदि शब्द आज के परिवेश में समझने वाले लोग कम हैं।

मुझे स्मरण रखने व मेरी लेखनी को प्रेरित करते हेतु साधुवाद। अनेकानेक शुभकामनाएं। **-बनवारीदत्त जोशी**

खबर-सन्दर्भ

खबर - 1
खबर वह नहीं है
जो है।
खबर
खबर नहीं है।
खबर से इतर है खबर।
खबर -2
आज की खबर
सच्चाई की
पक्षधर की नहीं
सच्चाई से
युद्धरत है।
खबर - 3
खबर
संवाददाता के सच के साथ
बलात्कार है ;
बिके हुए
संपादक के मुंह से
न निकल पाया चीत्कार है ;
नेता का
संतुष्ट होता हुआ अहंकार है ;
सरकार का अनियंत्रित
व्यभिचार है ;
पूंजी के छद्म का हथियार है ;
और
अंतत:
आतंक का सबसे प्रभावी
प्रचार है खबर।

-रामकिशोर मेहता

सांवलिया धाम प्रोजेक्ट का शुभारंभ

उदयपुर। रिटायर्ड विशिष्ट नगर नियोजक बी एस कानावत ने कहा कि अल्प व निम्न आयवर्ग के लिए सांवलिया धाम खुशियों व दुआओं की सौगात है। यह सबके अपने सपनों के घर का सपना साकार करने के साथ ही यहां रहने वालों के जीवन में खुशियों के रंग भी भर देगा। कानावत ने सांवलिया धाम प्रोजेक्ट के भव्य शुभारंभ एवं सैंपल फ्लैट के लोकार्पण समारोह में बोल रहे थे। इस अवसर पर उद्यमी एवं समाजसेवी महेशचंद्र शर्मा, अशोक डंगायच, दलजीत सिंह एवं नरेन्द्रसिंह मलावत सहित बड़ी संख्या में गणमान्यजन नागरिक मौजूद थे।

कार्यक्रम व परियोजना स्थल देबारी में सूखा नाका रोड़ पर प्रधानमंत्री व मुख्यमंत्री जन आवास योजना के प्रारूप 3-ए के तहत 375 फ्लैट्स की वृहद अफोर्डेबल हाउसिंग आवासीय योजना 'सांवलिया धाम' की सौगात दी जा रही है। सांवलिया बिल्ड क्रिएशन के निदेशक प्रकाशचन्द्र मेनारिया व राजेंद्र जैन ने कहा कि यह उनका ड्रीम प्रोजेक्ट है जिसमें जन सरोकार की भावना भी जुड़ी है। 'सांवलिया धाम' देबारी सर्किल से सिर्फ 1.5 किलोमीटर और हाइवे से 150 फ़ीट दूर व उदयपुर शहर के एकदम समीप है। देबारी में अल्प आय एवं निम्न आय वर्ग के लिए 375 फ्लैट्स का निर्माण मेसर्स सांवलिया बिल्ड क्रिएशन एलएलपी कर रही है।

इसमें शहर के अल्प एवं निम्न आय वर्ग के लोगों के साथ ही अन्य शहरों के इस वर्ग के पात्र लोग आवेदन कर सकेंगे। प्रोजेक्ट कुल 375 फ्लैट में ईडब्लयूएस के 173 फ्लैट, एलआईजी के 202 फ्लैट हैं। इसमें केंद्र सरकार की ओर से 2.68 लाख की ब्याज पर सब्सिडी पात्र व्यक्तियों को दी जा रही है। फ्लैट की बुकिंग सहेलियों की बाड़ी रोड स्थित कंपनी कार्यालय व प्रोजेक्ट स्पॉट पर भी की जाएगी।

स्मृतियों के शिखर (65) : डॉ. महेन्द्र भानावत

स्मृतियों के शिखर बनीं लोकसंस्कृतिनिधि मालती शर्मा

डॉ. मालती शर्मा लोक-संस्कृति की एक ऐसी निधि-सन्निधि रहीं जिन्होंने पिछले पचास वर्षों में लोक की परम्परा को न केवल देखा, समझा और खोजा, परखा अपितु उसकी नाड़ी की धड़कन को सुनते हुए उसमें अपनी धड़कन को धारासनित किया है। मेरे द्वारा सम्पादित रंगायन के जनवरी 1970 के 33वें अंक में मालतीजी का 'ब्रज-जनपद की दूध एवं उसके व्यवसाय से सम्बन्धित शब्दावली' शीर्षक पहला लेख छपा जिससे कई लोग प्रेरित हुए।

उसके बाद तो वे निरन्तर नये-नये अजूबे ऐसे विषयों पर लिखती रहीं जिनकी किसी को कल्पना तक नहीं थी। ऐसा कई विद्वानों ने मुझे लिखा भी। उनकी 'परम्परा का लोक' (2016) पुस्तक के सम्पादकीय कथ्य में मैंने लिखा भी कि मालतीजी द्वारा लिखित ये लेख किसी एक दिशा, एक दृष्टि, एक विषय, एक विन्यास, एक शिल्प, एक शैली, एक बोध, एक लोकाचार, एक विचार, एक मत, एक रंग, एक छवि, एक मंतव्य के सूचक नहीं हैं और न किसी एक ही लेखन-सांचे से आबद्ध हैं। सब अपने में अलग विविध हैं। अजूबे हैं। कहीं से भी अपनी यात्रा शुरू कर समाप्त कर देने वाले हैं। कभी वे हमें अपने साथ लेकर दर्शनीय स्थलों का भ्रमण कराते हैं तो कभी एक ही पक्ष की ठेठ गहराई देती खदान में पैठ करा चमत्कृत कर देते हैं।

मालतीजी के इन लेखों में साहित्य की सारी विधाओं का चखान उनके लेखन की एक बड़ी उपलब्धि कही जायेगी। उनमें लोक-संस्कृति का लबालब हिलोला-हिचकोला है तो प्राचीन सूत्र की पंडिताई का हवाला देते लोक-सम्मत सदाबहार की सुहावनी बौछारों द्वारा मन का उल्लास भी प्रतिध्वनित हुआ मिलता है। उनमें बड़े-बड़े शहरों-कस्बों की चकाचौंध नहीं अपितु छोटे-नन्हें गांवों का अल्हड़ एवं अहा जीवन की शान्त-सुखद आबोहवा का हलरावण, दुलरावण भी ठसक देता हेला मारता है। रपट्यां भरता है। रस रंग देता है।

इन निबन्धों में रसिया और ढोला की तानें गूंज रही हैं। वैशाख-जेठ की धूप में चिलकती गेहूं-जौ की बाली भरे खेत आंखों में समा जाते हैं। उनमें सिलहारिनों की पैछर गूंज रही है। सभी तो हैं। उमंग भरे श्रम की जीती-जागती मूर्तियां धोबिनें, गडरनीनें, कुम्हारिनें, चमारिनें और रोटी पुरते घरों की बहू-बेटियां भी पर इस समय सब बस सिलहारिनें। कोई रंग-बिरंगी हैं तो कोई भकमूसरी। कंधों पर बालें रखने के लिए झोली है या हाथों में टोकरी। जेठ-वैशाख की लू के थपेड़ों को शीतल बनाने आती-जाती टोलियों से गीत उठ रहे हैं।

ढोलों की विश्वासपूर्ण टेरों, रसियों की आमंत्रण भरी तानों और भजनों के निर्वेदों में वे अपने रचते पैरों की जलन भी भूल गई हैं- 'रसिया आयौ महल खबरि करियौ, रसिया आयौ।' अभी मादक बसंत का दबदबा बना हुआ है। इसलिए रसिया को खबर करने की जरूरत भी आ पड़ी।

यह सच है कि मालतीजी की तरह हम सबको भी अपनी परम्परागत भारतीयता के जीवनमूल्य आकर्षित करते हैं और उन्हीं में रचबस जाने को सुख मानते हैं किन्तु उनमें आ रहे परिवर्तनों की ना देखी और चुप्पी भी सह्य नहीं होती। जो मूल्यवान है उसे बचाया जाना चाहिये। अपने आलेखों में मालतीजी जिस ढंग से विषय का प्रतिपादन करती हैं और आंचलिकता को उभारती हैं वैसा लेखन, अपने होने का, बहुत कम लोगों ने किया है।

मालतीजी ने बड़ी बेबाकी से गालियों की गीत-गंगा प्रवाहित की है। गालियों की बौछारें जहां पुरुषों को तिलमिला देती हैं वहीं नारियों के अश्लीलत्व की शील उघाड़ती मौन-सुख देती हैं। विवाह जैसे अवसरों पर तो गालियां समधी-समधिन को ऐसी भाती हैं कि जूता भी फुलका लगता है। गालियों की तलब देखिये कि वे अभिधा में हों अथवा लक्षणा में कि व्यंजना में ; सब ओर से मजा ही मजा देती हैं।

मालतीजी ने ठीक ही लिखा- 'नारी गीतों की वर्षा ऋतु तो विवाह है जहां जब-तब गालियों की बौछारें बरसती ही रहती हैं। खोइया की दो रातों की बात छोड़ दें तब तो गालियों के सिवाय कुछ होता ही नहीं। किसी भी पक्ष के लिए गाली गाई जाय मगर बेटी से सम्बन्ध जोड़कर गाली नहीं गाई जाती। भाभी के लिए तो बहन गाली गा सकती है पर भाई के लिए नहीं। गालियां स्त्री समाज को ही अधिक मिलती हैं।'

महत्वपूर्ण पक्ष यह है कि पहलीबार जिन विविध कोणों, आयामों और अनुभवों को लेकर मालतीजी ने गालियों का पैना अनुशीलन किया है वह किसी पुरुष की तो क्या महिला लेखिका से भी सम्भव नहीं था। ऐसे लेख जानकारियों की दृष्टि से ही नहीं, शोध-बोध की दृष्टि से भी दिशा-निर्देश देते लगते हैं।

'परंपरा का लोक' ग्रंथ के प्रारंभ में 'घट संचित बूंदों की कहनी' में मालतीजी ने जब मेरे लिए लिखा- 'इस घट के ब्रह्मा-कुंभकार डॉ. महेंद्र भानावत हैं जो कुंभ-निर्माण-कला, संपादन-कला में मेरी जानकारी में बेजोड़ हैं। उन्हीं की प्रेरणा और उन्हीं का निर्माण इस कृति में है' और अंत में यह लिखकर मुझे ही भेंट करदी- 'लोक-परंपरा की अनवरतता, निरंतरता पिछले 50 वर्षों के लेखन की यह संपादित कृति लोकसाहित्य के सुमेरु डॉ. महेंद्र भानावत को ही समर्पित है।' इसे पढ़ जब मैंने मालतीजी को फोन किया तो बोलीं- 'आप स्वयं नहीं जानते कि आपने कितनों के लिए क्या नहीं किया। मैंने सच ही लिखा है।'

भारतीय लोककला मण्डल में जब पहली बार 07 अक्टूबर 1972 और दूसरी बार उसके रजत जयंती समारोह 22 से 26 फरवरी 1978 के मौके पर अखिल भारतीय लोककला संगोष्ठी समारोह आयोजित किये गये तब मालतीजी ने जो लेख पढ़े वे समय की समझ के द्योतक हैं जो यह इंगित करते हैं कि परम्परानिष्ठ समाज में आ रहा बदलाव कितनी चुनौतियां दे रहा है और जिनके रहते इन कलारूपों का बचाव तथा संरक्षण कैसे किया जा सकता है और उसकी क्या सम्भावनाएं हैं। इन लेखों के जरिये विगत चार दशकों में आए बदलाव का तुलनात्मक तोल-मोल भी किया जा सकता है कि हम कहां और किन परिस्थितियों में रहे और आज हैं।

हम लोग भाग्यशाली हैं कि हमने आजादी के पूर्व का समय भी भलीप्रकार देखा। देखा ही नहीं, समझा भी और उस समझ-दृष्टि से लोकपरक जो आकलन किया, क्या अब कोई आगे कर सकेगा? सब कुछ तो जैसे समय की शिला से खिसका रपटा जा रहा है। जो हमने देखा उसे देखना तो दूर, उसकी गंध भी अब क्या कोई ले पायेगा? हमारे अधुनातन आविष्कारों में चाहे कितने ही नये स्वाद जुड़ जांय किन्तु जो पुराने स्वाद हमारे चखने और हमें जीवित बनाये रहने में आनंदमग्न बने हैं वे लौटकर नहीं आ सकते और न उनकी व्याख्या-विवेचना ही की जा सकती है।

अपवाद स्वरूप ही सही, हम लोगों ने आजादी के पूर्व के काल-समै को भी पूरी समझ से देखा और उसके बाद के समै को भी खूब मजे से मांजा है। ऐसे में मालतीजी जैसी रसवन्ती लेखिका अभिनंदनीय हैं कि उन्होंने अपनी सारस्वत कलम से उस परम्परा को शब्दांकित-कमलांकित कर दिया जिसका सौंदर्य-शील अब उस असल रूप में शायद ही किसी को, देखने को मिल सकेगा।

मालतीजी के अनेक पत्र मेरे पास सुरक्षित हैं। अन्य अनेक लोगों के पत्र भी मेरे पास कम नहीं हैं। अगरचन्द नाहटा से लेकर उन अनेक विद्वानों के पत्र हैं जिनसे मेरा घनिष्ट सम्बन्ध रहा और जिनका पर्याप्त सान्निध्य मुझे मिला। उन लोगों के पत्र भी हैं- हरिवंशराय बच्चन, रामकुमार वर्मा, क्षेमचन्द 'सुमन', रामेश्वर शुक्ल 'अंचल' से कभी मेरा मिलना नहीं हुआ और जिनसे मिलना हुआ- डॉ. श्याम परमार, डॉ. सत्येन्द्र, गोपालप्रसाद व्यास, रामनारायण अग्रवाल, प्रभाकर माचवे, देवीलाल सामर, कपिला वात्स्यायन, जगदीशचन्द्र माथुर, विष्णु प्रभाकर, रामनारायण उपाध्याय, विद्यानिवास मिश्र, धर्मवीर भारती आदि उनके भी ऐसे बड़े ही मजेदार पत्र हैं ; मुझे सदैव ही प्रेरणा देने वाले, जीवनानुभवों की खिड़कियां खोलने वाले, हर बार नया कुछ कहने वाले ; सभी पत्र अकूत धरोहर के रूप में सम्भाल कर रखने की पूंजी देते लगते हैं।

पत्रों के इस पिटारे में मालतीजी के सर्वाधिक पत्र हैं। इनमें घरेलू पत्र से लेकर साहित्य जगत की हलचल देते पत्र भी हैं तो सांस्कृतिक सरोकारों के श्रीवर्धन को बढ़ावा देने वाले पत्रों की भी भरमार है। हमारी मित्र मण्डली की खोज-खबर लेते , उनके कार्य की विवेचना करते पत्र भी हैं तो हमारे आपसी लेखन-प्रकाशन की भाईचाराजनित टिप्पणियों का सुखानन्द लेते पत्र भी हैं। ऐसे पत्र भी हैं जो बहुत सारी स्मृतियों में डूबोकर अश्रुगलित करते हैं और ऐसे भी जो किन्हीं संगोष्ठियों, सम्मेलनों के बहाने आपसी संवाद का माध्यम बन उन विद्वानों से भी मिलने-मिलाने का अवसर सुगम बनाते हैं जिन्होंने अपने क्षेत्र को अंगद का पांव बनाकर अपनी पहचान बनाई है। कई भाई-बहिनों से भेंटकर उनसे पारिवारिक रिश्ते बनाने की दृष्टि से भी हमारा लेखन समृद्ध बना है।

मालतीजी को मैंने आदिवासी लोककला परिषद, भोपाल से प्रकाशित अपनी 'पाबूजी की पड़' तथा अपने अग्रज डॉ. नरेन्द्र भानावत पर स्मृति ग्रन्थ के रूप में प्रकाशित 'नमन' नामक ग्रन्थ भेजा तो उन्होंने 25/2, पाखर, पुणे से 27 मार्च 2003 को बड़ा ही भावपूर्ण अन्तर्देशीय पत्र लिखा- पाबूजी की पड़ पर टीप और पत्र मिला होगा। आपने मणि 'मधुकर' की उक्ति 'पड़ बोलेगी, गाथा मुंह खोलेगी' साकार कर दी। दो दिन से सीधा घुटना बगावत कर बैठा है तो 'नमन' को नमन करने का अवसर पा गई। पढ़ती जाती थी और आपके परिवार की पू. मां की उत्कट जिजीविषा पर भाई साहब व भाभीजी की वाक अर्थ जैसी आंखों और अंजन सी युगल मूर्ति पर निछावर होती जाती थी।

मैं आपके सम्पादन के 'गेह्रो फूल गुलाब रो' से लेकर अनेक ग्रन्थों से रू-ब-रू हुई हूं पर 'नमन' को पढ़कर आपकी लेखनी को नमन करने का अनायास ही मन हो रहा है।

यह ग्रन्थ तो श्रद्धांजलि जल से भरी आदरांजलि है न व्यक्तिव-कृतित्व पर केन्द्रित अभिनन्दन ग्रन्थ ही बल्कि यह ऐसे एक परिवार की, वंश की अनथक यात्रा कथा है जिन्होंने एक पुरातन धर्म से लोक परम्पराओं से संचालित समाज में रहकर समय की धरती पर उदात्त मानवीय भावनाओं के संस्कार-स्तंभ खड़े किये हैं। ऐसी रोशनी दी है जो निज के साथ सबको आलोकित करती है।

इसमें आपके द्वारा लिखित 'मेरे दादाभाई' लेख में आपके गद्य का अनोखा ही आस्वाद, एक अलग ही रूप है। इस पूरे लेख में मेवाड़ अंचल का एक हिस्सा अपनी सारी जीवन्त शब्दावली के साथ जी उठता है, बोलता है और शक्ति देता है। उस भीतरी सम्पन्नता को दर्शाता है जिसे हम हर दिन खोते जा रहे हैं और जितने सम्पन्न हो रहे हैं उतने ही अधिक विपन्न होते जा रहे हैं। आपने यह भीतरी सम्पन्नता एक परिवार की जीवनयात्रा से चुनकर उन सहयोगियों, मार्गदर्शकों की कलम की चितरावण में प्रस्तुत कर समाज को सौंपदी है जो देख पढ़ सकेगा, गुन सकेगा, वह चल पड़ेगा और पहुंच जायेगा बिना किसी अन्य पाथेय और भटकन के। इस आन्तरिक पाथेय को पाकर मैं धन्य हुई हूं। मन भरा है अत: आभार के शब्द गूंगे हैं।

सस्नेह

मालती शर्मा

यह दूसरा पत्र नितान्त व्यक्तिगत, अपने परिजनों की याद करता, उनकी सुध लेता मालतीजी ने फ्लैट नं. 8 ब, मधु अपार्टमेंट, 1034, मॉडल कोलोनी, कैनाल रोड़, पुणे से 12 नवम्बर 2002 को लिखा-

प्रिय भानावतजी,

दीवाली मंगलमय हो। सबसे पहले 65वें जन्मदिवस 13 नवम्बर की आपको शुभेच्छाएं। यह भी सुखद संयोग ही है कि पिछले छह माह में जब घर के मक्कड़जाल में एकान्त सपना और कुछ लिख पाना दुर्लभ हो गया था, आठ माह बाद भाई बसन्त निरगुणेजी की पुस्तक की समीक्षा लिखी। उन्हें और आपको दोनों को पत्र लिखा तो अनायास ही आपका जन्मदिन याद आया। हम लोग अब अमृत महोत्सवी दशक में पहुंच रहे हैं। आप 12 दिन पहले मैं बाद में। इन छह महीनों में अपने जीवन में कभी नहीं जो हुआ वह हुआ, लेखन में वादा खिलाफी। वह भी अपने निकटतम रहे आत्मीयों से जुड़ी पत्र-पत्रिकाओं, ग्रन्थों के लिए लेख भेज ही नहीं सकी।

मराठी साहित्य ने पिछले महीनों में अपने रत्न खोये हैं, शान्ता शेल्के, वसन्त बापट और शिवाजी सामंत। इनसे तो बहुत ही जुड़ाव था। श्रीपाद जोशीजी भी गये। वातावरण बड़ा बोझिल बना रहा। इसी के साथ हमारे ठीक बीच से डॉ. शर्मा की छोटी बहिन और ससुराल के महिला वर्ग में मेरी सबसे निकट, सबसे आत्मीय ननद का चला जाना सन्न ही कर गया। इन आघातों से मृत्यु बार-बार अपने चिरंतन सत्य होने का एहसास कराती है पर कोई शक्ति है जो जीते चले जाने की घसीटन बनती है।

यह तो हुई हमारी गाथा, अब आप बतायें, आप सब कैसे हैं? चि. तुक्तक, शब्दांक, बहू रंजना और हमारी बेटियां कविता, कहानी, उनका परिवार? डॉ. कलाम की जीवनी पढ़ी होगी शायद। उसमें उन्हें कन्धों पर उठाये मेरे भाई का चित्र है। 'पृथ्वी' की पूरी टीम है। सब तरफ आजकल पत्रजगत में सन्नाटा है। याद आते हैं वे दिन जब सप्ताह में दो पत्र कम से कम पूना से उदयपुर, उदयपुर से पूना आते थे जाते थे। वे मेरे पास सुरक्षित हैं। -भाई! सब वक्त की बात है कभी हम वक्त पर से गुजरते थे, आज वक्त हममें से गुजर रहा है। हां विद्याविन्दुसिंह लम्बा मौन साधे है। कोई पत्र नहीं दीवाली पर भी। क्या आपके पास आया?

सस्नेह

मालती शर्मा

मालतीजी कभी मौन नहीं रहीं। अपनी हर हलचल का संवाद देती रहतीं। मित्रों की खोज-खबर लेती रहतीं। जब भी कोई रचना छपती, छपने को भेजतीं या नया लिखतीं उसकी खबर अवश्य देतीं। रचना गद्य की होती तो उसका सारभूत लिखा और पद्य की होती तो बनती कोशिश पूरा सुनाने का सुख बटोरती। बीमारी की हालत में भी हार नहीं खातीं। तब कविताएं अधिक लिखतीं, छोटी-छोटी, चार-चार कविताएं सुनाकर कहतीं, आजकल कविताएं मेरे पीछे पड़ी हैं। ऐसा भी इन दिनों हुआ जब मोबाइल स्वीच ऑफ मिला। कभी सेविका कहतीं, सोई हुई हैं। उठ नहीं पायेंगी। मैं बोलता, इतना ही जानना था, सो जान लिया। दवाई बराबर देती रहना। उनके स्वास्थ्य का पूरा ध्यान रखना। जब वे जग जायें, ठीक स्थिति में हो और पूछें तो कह देना, उदयपुर से फोन आया था।

विश्वास नहीं हुआ जब लखनऊ से डॉ. विद्याविन्दुसिंह ने 13 अक्टूबर 2018 को खबर दी, भैया, मालती दीदी नहीं रहीं। मैं धक् रह गया। विश्वास नहीं हुआ। जो हम सबकी खबर लेतीं वह बिना खबर दिये कैसे चली गईं! स्मृतियों की शिखर बन गईं!

जगुआर एक्सजे50 लॉन्च

उदयपुर। जगुआर लैंड रोवर इंडिया ने आज जगुआर एक्सजे50 की बिक्री आरंभ करने की घोषणा की है। एक्सजे50 एक स्पेशल एडिशन मॉडल है जिसे ट्रेडमार्क प्रदर्शन, तकनीक और लग्जरी के अर्द्धशतक का जश्न मनाने के लिए डिजाइन किया गया है। पांच दशकों से, जगुआर एक्सजे वैश्विक स्तर पर बिजनेस लीडर्स, सेलेब्रिटीज, राजनेताओं और रॉयल्टी की पसंद रही है। एक्सजे50 जगुआर के लग्जरी सैलून की मनमोहक स्टाइल एवं प्रदर्शन को सम्मान देने के लिए बिल्कुल उपयुक्त है। जगुआर लैंड रोवर इंडिया लिमिटेड (जेसीआरआइएल) के प्रेसिडेंट एवं प्रबंध निदेशक रोहित सूरी ने कहा कि जगुआर एक्सजे हमेशा से लग्जरी एवं उत्कृष्टता पर किये जाने वाले जगुआर के फोकस का प्रतीक रही है। एक्सजे50 के साथ, हमने एक बार फिर स्तर को ऊपर उठाया है, हम दुनिया के एक सबसे स्टाइलिश स्पोर्टिंग सैलून्स को सम्मान दे रहे हैं। 3.0 लीटर, 225केडब्ल्यु डीजल पावरट्रेन के साथ लंबे व्हीलबेस में उपलब्ध, एक्सटीरियर को एक्सजे50 के लिए सुधारा गया है। इसमें ऑटोबायोग्राफी-स्टाइल वाला फ्रंट और रियर बम्पर्स दिये गये हैं।

लैंड रोवर डिस्कवरी स्पोर्ट वैरिएंट्स लॉन्च

उदयपुर। जगुआर लैंड रोवर इंडिया ने ऐडवेंचर और वर्सेटाइल एसयूवी मॉडल ईयर 2019 डिस्कवरी स्पोर्ट को लॉन्च करने की घोषणा की है।

मॉडल ईयर 2019 डिस्कवरी स्पोर्ट के प्रत्येक डेरिवेटिव को ताजगीपूर्ण और रोमांचक खूबियों के साथ सजाया गया है, जो ऐडवेंचर के असली उत्साह की पेशकश करने के लिये वाहन की दक्षता को बेहतर बनाता है। जगुआर लैंड रोवर इंडिया लि. (जेएलआरआइएल) के प्रेसिडेंट और मैनेजिंग डायरेक्ट रोहित सूरी ने कहा कि मॉडल ईयर 2019 डिस्कवरी स्पोर्ट के साथ, हम अपने ग्राहकों के लिये डेरिवेटिव्स की एक व्यापक रेंज और उन्नत पावरट्रेन विकल्पों की पेशकश कर रहे हैं, जो दक्षता और एक बेहतर ड्राइविंग अनुभव उपलब्ध कराते हैं। वर्सेटिलिटी और विशिष्ट डिजाइन का अनूठा संयोजन डिस्कंवरी स्पोर्ट को लैंड रोवर पोर्टफोलियो में एक प्रमुख मॉडल बनाता है।

प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना लागू

उदयपुर। निजी क्षेत्र में भारत की तीसरी सबसे बड़ी गैर-जीवन बीमा प्रदाता एचडीएफसी एर्गो जनरल इंश्योरेंस कंपनी को, राजस्थान सरकार द्वारा प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना (पीएमएफबीवाई) को लागू करने के लिये अधिकृत किया गया है। यह योजना राज्य के जैसलमेर, सीकर, टोंक, जयपुर, पाली और प्रतापगढ़ में ऋणी एवं गैर-ऋणी किसानों के लिए रबी 2018 के लिये उपलब्ध है।

राजस्थान सरकार की इस योजना के तहत अधिसूचित की गई निम्नलिखित फसलों के लिए इन जिलों में यह योजना लागू की जाएगी, जैसलमेर में जीरा, चना, इसबगोल, सरसो, गेहूं के लिए, सीकर में जौ, चना, मेथी, सरसों, गेहूं के लिए, टोंक में जौ, जीरा, चना, सरसों, तारामीरा और गेहूं के लिए, जयपुर में जौ, चना, मेथी, सरसों, तारामीरा, गेहूं के लिए, पाली में जौ, जीरा, चना, इसबगोल, मेथी, सरसों, तारामीरा, गेहूं के लिए, प्रतापगढ़ में जौ, चना, इसबगोल, मसूर, मेथी, सरसों और गेहूं के लिए।

पीएमएफबीवाई स्कीम सूखा, बाढ़, शुष्क काल, भूस्खलन, चक्रवात, तूफान, कीट एवं बीमारियों और कई अन्य क्षेत्रों जैसे बाहरी जोखिमों से फसल को होने वाले नुकसान के लिए किसानों का बीमा करती है। उपज में हुए नुकसान का निर्धारण करने के उद्देश्य से, राज्य सरकार इस योजना के लिए अधिसूचित क्षेत्रों में अधिसूचित फसलों पर फसल काटने के प्रयोग (क्रॉप कटिंग एक्सपीरिमेंट्स-सीसीई) के लिए योजना बनाएगी और उसका क्रियान्वयन करेगी। यदि सीसीई के आधार पर उपज डेटा कम हो जाता है, तो किसानों को उनकी उपज में कमी का सामना करना पड़ेगा जिसके लिए किसानों को दावों का भुगतान किया जाएगा।

ब्रह्मानंद ने किया जिंक फुटबाल अकादमी का दौरा

उदयपुर। भारत के दिग्गज फुटबाल खिलाड़ी और सेसा फुटबाल अकादमी के चीफ मेंटॉर ब्रह्मानंद शंखवाल्कर ने गोवा स्थित इस अकादमी के तकनीकी निदेशक एडवर्ड जुजु बैटली के साथ शुक्रवार को उदयपुर के जावर स्थित जिंक फुटबाल अकादमी का दौरा किया। जिंक फुटबाल अकादमी के दौरे के दौरान ब्रह्मानंद और बैटली ने अकादमी के युवा फुटबालरों के साथ एक इंटरैक्टिव सेशन में हिस्सा लिया और बच्चों के साथ अपने अनुभव साझा किए। इस दौरान दोनों ने बच्चों को अच्छा फुटबाल खिलाड़ी बनने के लिए जरूरी विभिन्न गुणों के बारे में बताया।

पूर्व भारतीय कप्तान ने भारत में सबसे उन्नत तकनीक आधारित फुटबाल अकादमी शुरू करने के लिए हिंदुस्तान जिंक लिमिटेड की सराहना की। पूर्व कप्तान ने कहा कि इस अकादमी में देश की राष्ट्रीय टीम के लिए खिलाड़ी पैदा करने के सभी गुण और सुविधाएं मौजूद हैं। शंखवाल्कर ने कहा कि फीफा अंडर-17 विश्वकप और इंडियन सुपर लीग ने भारत में फुटबाल संस्कृति को बढ़ावा दिया है। इससे एक नए तरह की लहर आई है। बच्चे अब खेलों में अपना करियर बनाने के लिए उत्सुक हैं। ऐसे में वेदांता फुटबाल का बच्चों को बाहर की प्रतिस्पर्धी दुनिया से रूबरू कराने और समुदायों के बीच के फासले को कम करने का यह प्रयास काफी सराहनीय है। मैं जावर स्थिति आवासीय अकादमी की विश्वस्तरीय व्यवस्था को देखकर काफी खुश हूं।

पन्द्रह दिन की नवजात को मिला जीवनदान

उदयपुर। गीतांजली मेडिकल कॉलेज एवं हॉस्पिटल के कार्डियोलोजिस्ट की टीम ने पन्द्रह दिन की नवजात की पीडीए स्टेंटिंग कर नया जीवन प्रदान किया। इस सफल इलाज करने वाली टीम में कार्डियोलोजिस्ट डॉ. कपिल भार्गव, डॉ. रमेश पटेल, डॉ. डैनी कुमार एवं डॉ शलभ अग्रवाल शामिल है।

उल्लेखनीय है कि उदयपुर की रमीजहां की गत दिनों निजी हॉस्पिटल में सामान्य डिलिवरी हुई। डिलीवरी के कुछ घंटों बाद ही नवजात का शरीर नीला होना शुरू हो गया। आपातकालीन स्थिति में परिजन उसे गीतांजली हॉस्पिटल लाए जहां हृदय रोग के संदेह के चलते नवजात के एक्स-रे एवं ईकोकार्डियोग्राफी की जांचें की गई जिसमें पता चला कि नवजात के दिल में छेद है, हृदय का एक वॉल्व नहीं बना हुआ है और हृदय से निकलने वाली दो मुख्य धमनियां आपस में जुड़ी हुई हैं। इस बीमारी का इलाज सर्जरी द्वारा ही संभव है परंतु नवजात की नाजुक हालत को देखते हुए सर्जरी संभव नहीं थी। इस पर चिकित्सकों द्वारा नवजात की हालत को स्थिर करने के लिए एवं सर्जरी तक जीवित रखने के लिए पीडीए स्टेंटिंग की गई। पीडीए एक रास्ता होता है जो फेफड़ों तक रक्त की आपूर्ति करता है। अनुभवी एवं प्रशिक्षित चिकित्सकों की टीम ने मात्र आधे घंटे की प्रक्रिया से जुड़ी हुई धमनियों के बीच स्टेंट डाल दिया। पाँव की नस से इस पीडीए को स्टेंट किया जिससे यह पीडीए खुला रहे और उचित रक्त फेफड़ों में जा सके जिससे नवजात को ऑक्सीजन मिल सके एवं सर्जरी तक वह जीवित रह सके।

डॉ. पटेल ने बताया कि एक लाख में से केवल तीन या चार नवजात में पाए जाने वाली इस बीमारी में त्वरित उपचार की आवश्यकता होती है किन्तु इतने कम वजनी नवजात का उपचार करना काफी जटिल होता है। पीडीए स्टेंटिंग का इलाज दिल्ली, मुबंई, चेन्नई जैसे महानगरों के बाद अब राजस्थान के उदयपुर शहर में भी संभव है। नवजात का इलाज राजस्थान सरकार की भामाशाह स्वास्थ्य बीमा योजना के अंतर्गत नि:शुल्क किया गया।

लक्ष्यराजसिंह 'यंग अचीवर फॉर प्रिजरविंग हेरिटेज' अवार्ड से सम्मानित

नई दिल्ली में आयोजित एक भव्य समारोह में होटलों के क्षेत्र में विश्व स्तर पर कार्य करने वाली संस्थान बीडब्ल्यू बिजनेस वर्ल्ड द्वारा उदयपुर के होटेलियर लक्ष्यराज सिंह मेवाड़ को यंग अचीवर फॉर प्रिजरविंग हेरिटेज एवं प्रमोटिंग हॉस्पिटेलिटी के अवार्ड से नवाजा गया। बीडब्ल्यू द्वारा आयोजित द्वितीय बीडब्ल्यू होटेलियर माइस कॉन्क्लेव एण्ड अवार्ड 2018 के लिए विश्व भर से चयनित होटलों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। नई दिल्ली के द ग्रैण्ड होटल में आयोजित समारोह में एचआरएच ग्रुप ऑफ होटल्स के कार्यकारी निदेशक लक्ष्यराज सिंह मेवाड़ को बीडब्ल्यू होटेलियर के चेयरमेन एवं सीईओ डॉ. अनुराग बत्रा ने मेवाड़ द्वारा एचआरएच ग्रुप ऑफ होटल्स की 17 से अधिक होटलों में जीवंत विरासत के संरक्षण, संवर्द्धन एवं उत्थान के क्षेत्र में कार्य करने के लिए विशेष रूप से यह अवार्ड प्रदान किया। समारोह में बीडब्ल्यू होटेलियर के भुवनेश खन्ना, जीन माइकल एवं बिक्रमजीत रॉय आदि उपस्थित थे।

श्रीमद्भागवत कथा में साक्षी व निवाशी बंधे परिणय सूत्र में

उदयपुर। उत्तराखण्ड व हरियाणा में नारायण सेवा संस्थान के संस्थापक कैलाश मानव, अध्यक्ष प्रशांत अग्रवाल एवं ट्रस्टी देवेंद्र चोंबीसा के मार्गदर्शक पर शाखा संयोजिका अमिता शर्मा के अथक प्रयासों से श्रीमद्भागवत कथा का आयोजन किया गया। शाखा प्रान्तीय प्रभारी धर्मपाल गर्ग ने बताया कि कथा के दौरान अंतिम विश्राम दिवस पर कनखल हरिद्वार शिवपुरी कालोनी निवासी साक्षी नारायण सेवा संस्थान शाखा हरिद्वार के सम्पर्क में आई। बेटी के विवाह के लिए पिता आर्थिक रूप से सक्षम नही था। प्रान्तीय प्रभारी व शाखा संयोजिका अमिता शर्मा द्वारा साक्षी के विवाह हेतु इस प्रस्ताव को प्रशांत अग्रवाल के पास रखा गया। प्रशांतजी ने संस्थान द्वारा सभी खर्चों को वहन करते हुए साक्षी के विवाह हेतु स्वीकृति प्रदान की।

गर्ग द्वारा बताया गया कि श्रीमद्भागवत कथा का आयोजन समस्त शिवपुरी कालोनी के भक्तों द्वारा भव्य तरीके से किया गया और लड़की साक्षी व लड़का निवाशी भारी जनसमूह के बीच परिणय सूत्र में बंधे। संस्थान की ओर से साक्षी को अलमारी, डबल बेड, गद्दे, सन्दूक, कुर्सी मेज, चादर, तकिया, रजाई, कम्बल पंखा, पेस, सिलाई मशीन, बर्तन सेट, 21 साड़ी, 11 जेंट्स सूट व गिफ्ट आदि उपहार में दिया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि अमित गोयल, अमित राठी, व्यास धनन्जय कृष्ण, सुधीर पंडित, कैलाश, नीरज वालिया व योगेश बिश्नोई मौजूद थे।

'कोचेज एक्रॉस कॉन्टीनेंट्स' ने किया जिंक फुटबाल अकादमी का दौरा

उदयपुर। खेलों को सामाजिक उत्थान का माध्यम मानने वाला 'बियॉन्ड स्पोर्ट ग्लोबल इम्पैक्ट ऑफ द इअर 2018' अवार्ड से सम्मानित गैर लाभकारी संगठन 'कोचेज एक्रॉस कॉन्टीनेंट्स' इन दिनों उदयपुर के जावर स्थित जिंक फुटबाल अकादमी के दौरे पर है।

'कोचेज एक्रॉस कॉन्टीनेंट्स' का काम छह महाद्वीपों के 56 देशों में विस्तृत है। इस संगठन ने अपने शानदार काम से दुनिया भर के 1.6 करोड़ बच्चों के जीवन को प्रभावित किया है। 'कोचेज एक्रॉस कॉन्टीनेंट्स' प्रतिनिधिमंडल में एश्लिन हार्डी, मैकेंजी मीहान, मोरित्ज गुएटर्लर और जेसी डीलूजियो शामिल हैं और ये लोग जिंक फुटबाल प्रोग्राम से जुड़े विभिन्न साझीदारों के साथ मत साझा कर रहे हैं। अपने क्षेत्र के इन चार दिग्गजों ने जावर स्थित एफपीएसी एरेना में इन्फॉमेर्टिव सेशन में हिस्सा लिया और जिंक फुटबाल के 60 कोचों के साथ अपने विचार साझा किए। इन लोगों ने लिंग विभेद, महिला सशक्तिकरण, स्वास्थ्य जैसे गम्भीर विषयों पर चर्चा की।

वण्डर सीमेंट बना एशिया का मोस्ट प्रॉमिसिंग ब्राण्ड

चित्तौड़गढ़। वण्डर सीमेंट को आईब्राण्ड्स 360 डब्ल्यूसीआरसीआईएनटी अनुसंधान द्वारा किए गए अध्ययन में सीमेंट श्रेणी में 'एशिया का मोस्ट प्रॉमिसिंग ब्राण्ड वर्ष-2018' का दर्जा प्रदान किया गया है।

वण्डर सीमेन्ट के ब्राण्ड कन्सलर्टेंट तरुणसिंह चौहान ने कहा कि हमें इस बात का गर्व है कि आईब्राण्ड्स 360 डब्ल्यूसीआरसीआईएनटी रिसर्च ने हमें एशिया की मोस्ट प्रॉमिसिंग ब्राण्ड के रूप में मान्यता प्रदान की है। यह ब्राण्ड देश का सबसे कम उम्र का ब्राण्ड है जिसे शुरुआत की इतनी छोटी अवधि में सबसे प्रतिष्ठित स्थिति के लिए मान्यता प्राप्त हुई है। हमारे निरंतर अभियानों और संचार उपकरणों के एकीकृत उपयोग के माध्यम से, इस ब्रांड को हम इस वर्ष 9 करोड़ से ज्यादा लोगों तक पहुंचने में कामयाब रहे हैं।

वर्ष 2012 में महज 3.25 मेट्रिक टन प्रतिवर्ष की क्षमता के साथ हमने राजस्थान, गुजरात, मध्यप्रदेश, दिल्ली, पंजाब, हरियाणा, उत्तराखंड और उत्तरप्रदेश के विशिष्ट बाजारों में अपनी पहुंच कायम करने के बाद दूसरी उत्पादन लाइन स्थापित करके अपनी क्षमता बढ़ाकर 6.75 एमटीपीए कर दी है। कम्पनी अब तीसरी लाइन भी स्थापित कर रही है तथा वर्ष 2019 के मध्य तक कार्य पूरा हो जाने के पश्चात इसकी क्षमता बढ़कर 11 मै. टन प्रतिवर्ष हो जायेगी।

जैसाणे में डाक संचार.....

(पृष्ठ एक का शेष)

हलकारे कहीं भी जाते तो अपनी लाठी जमीन पर ठोकते हुए चलते थे। घूघरों की आवाज उनके आगमन की सूचक होती थी। इस बात की पुष्टि में प्रस्तुत है, यह दोहा-

हलकारो हाकळ करै, घूघरिया घणकाय।
बेगा हालो बागजी, हाकम दियो बुलाय।।

जब कभी उक्त ख्याल खेला जाता था तो कोई एक कलाकार हलकारे का स्वांग रच कर लाठी के साथ ताल जमाते हुए मनमोहक नृत्य करता था। यह परम्परा आज भी अक्षुण्ण है।

जैसलमेर में डाक संचार व्यवस्था के अन्तर्गत बाह्य क्षेत्रों में पत्र आदि ले जाने के लिए दो तरीके प्रचलन में थे। पहला सीधी सेवा और दूसरा शृंखलाबद्ध सेवा। यहां सीधी सेवा से तात्पर्य गंतव्य स्थान तक एक ही हलकारा यात्रा करता था। वह बीच रास्ते में अपनी यात्रा समाप्त कर डाक आगे पहुंचाने के लिए किसी और हलकारे की सेवा नहीं लेता था। डाक संचार की शृंखलाबद्ध सेवा का स्वरूप लगभग वैसा ही होता था जैसा कि आधुनिक खेलकूद में 'रिले रेस' का होता है। जो डाक अधिक महत्त्वपूर्ण न हो अथवा जिस पर देरी से पहुंचने पर कोई प्रतिकूल प्रभाव न पड़ता हो वहां शृंखलाबद्ध सेवा यानी संचार विधि का इस्तेमाल किया जाता था।

इस विधि के अनुसार कोई एक हलकारा शहर से डाक लेकर निकटस्थ गांव में जाता था और उस डाक को आगे ले जाने के लिए अपने किसी परिचित हलकारे को सौंप देता था। इस प्रकार शृंखलाबद्ध तरीके से डाक मंजिल तक पहुंच जाती थी। ऐसे कार्यों के लिए बहुधा पैदल हलकारों की सेवाएं ली जाती थी। उल्लेखनीय है कि राज की संचार व्यवस्था केवल राज की डाक तक ही सीमित थी और यह रैयत के लिए बिल्कुल ही नहीं थी। इसलिए समाज में राज-व्यवस्था के समरूप व्यवस्था धीरे-धीरे पनपने लगी थी जिसके फलस्वरूप शहर और गांवों में डाक हलकारों की एक नयी जमात भी अस्तित्व में आने लगी। निजी पैदल हलकारे भी घुंघरों वाली मोटी लाठी रखा करते थे। आवश्यकता पड़ने पर ऊंटसवार तथा घुड़सवार हलकारे भी निजी डाक हेतु नियोजित कर लिए जाते थे।

इस प्रकार हम देखते हैं कि जैसलमेर में डाक संचार व्यवस्था का एक निर्धारित स्वरूप कभी भी नहीं रहा। राज की दखलअन्दाजी और मनमानी सर्वत्र दृष्टिगोचर होती थी परन्तु परम्पराओं से इस व्यवस्था को अवश्य ही थोड़ी-बहुत स्थायी एकरूपता मिल सकी थी जो जैसलमेर की दृष्टि से पर्याप्त थी।

छोटे जीवों की सुरक्षा

शेर ने मेमने से सवाल दागा-
तू न सही तो तेरे बाप-दादा ने
पानी गंदा किया होगा?
उससे पहले जरूरी है
शेर को सिंहासन से हटाना
उस पर महाभियोग लगाना
और उसकी नियत को
जग जाहिर करना।
बदनियत-बदमिजाज शेर को
जंगल की सीमा से खदेड़ कर
किसी कुएं तक
ले जाकर परछाई दिखाना।
समय की मांग है -
खरगोश-मेमनों को
दोस्ती का हाथ बढ़ाकर
गठबन्धन बनाना होगा।
चूहों को गले लगाकर
शेरों की मानसिकता समझना होगा।
बड़ों के आतंक से
तभी छोटे जीव बच पाएंगे
जान बचाकर उन्मुक्त भाव से
सुरक्षित रह जाएंगे।

-डॉ. रमेश 'मयंक'

सफल बायपास सर्जरी

उदयपर। पेसिफिक इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज (पीआईएमएस) उमरड़ा में चिकित्सकों ने एक वृद्ध की सफल बायपास सर्जरी की है।

पीआईएमएस के चेयरमेन आशीष अग्रवाल ने बताया कि ऋषभदेव निवासी 61 वर्षीय मरीज का तीनों नसों में ब्लॉकेज और हार्टअटैक की वजह से हार्ट 25 प्रतिशत ही काम कर रहा था। इसकी वजह से मरीज को चलने फिरने पर सीने में दर्द की तकलीफ रहती थी। इस पर गत दिनों परिजन मरीज को पीआईएमएस हॉस्पिटल में लेकर आए। यहां कार्डियक सर्जन डॉ. सुदीप चौधरी, कार्डियोलॉजिस्ट डॉ. संदीप गोलछा एवं कार्डियक एनेस्थेटिस्ट डॉ. राकेश भार्गव की टीम द्वारा मरीज की ऑफ पम्प बायपास सर्जरी की गई।

वीज़ा कॉन्टैक्टलेस कार्ड की संख्या 20 मिलियन पार पहुंची

उदयपुर। पेमेंट टेक्नोलॉजी, वीज़ा ने घोषणा की कि भारत में 20 मिलियन से अधिक वीज़ा कॉन्टैक्टलेस कार्ड जारी किए जा चुके हैं। भारत और दक्षिण एशिया में वीसा के ग्रुप कंट्री मैनेजर टी. आर. रामचंद्रन ने बताया कि हमारे ग्राहकों के साथ, तीन वर्ष से कुछ ही अधिक समय में, हम भारत में 20 मिलियन से अधिक उपभोक्ताओं को कॉन्टैक्टलेस कार्ड के लाभों को समझाने में सक्षम हो सके हैं। कॉन्टैक्टलेस कार्ड के प्रति जागरूकता बढ़ने के प्रयास के साथ ही हमने भारत में इसके लिए आवश्यक आधारभूत संरचना को एक मिलियन से भी अधिक पॉइंट्स तक पहुंचने में मदद की है। दुनियाभर में, कॉन्टैक्टलेस कार्ड उपभोक्ता को डिजिटल पेमेंट करने के लिए महत्वपूर्ण उत्प्रेरक साबित हुए हैं और उम्मीद हैं कि आने वाले कुछ माह में भारत में इसे अपनाने वालो की संख्या सबसे अधिक होगी।

जिंक़ सीआईआई आईटीसी सस्टेनेबिलिटी अवार्ड से सम्मानित

उदयपुर। हिन्दुस्तान जिंक़ को कार्पोरेट उत्कृष्टता,पर्यावरण प्रबंधन में उत्कृष्टता और सामाजिक उत्तरदायित्व

हेतु सतत विकास के क्षेत्रों में दूरदर्शी दृष्टिकोण के लिए प्रतिष्ठित सीआईआई आईटीसी सस्टेनेबिलिटी अवार्डस 2018 नीति आयोग के मुख्य कार्यकारी अधिकारी अमिताभ कांत ने प्रदान किए। जिंक़ की ओर से कार्पोरेट एक्सीलेंस आउटस्टेडिंग एकम्प्लीशमेंट अवार्ड चीफ एचएससी ऑफीसर आरएस आहुजा एवं एसोसिएट मैनेजर शमा जैन ने ग्रहण किया। यह पुरस्कार सतत् व्यापार में उत्कृष्ट नीति, कार्य के तरिकों और परिणाम के लिए दिया गया है। सामाजिक उत्तरदायित्व में उत्कृष्टता के लिए कमेंडेशन फॉर सिग्निफिकेंट एचीवमेंट अवार्ड, एसोसिएट मैनेजर सीएसआर मोनिका जैन ने तथा एक्सीलेंस इन एनवायरमेंट मैनेजमेंट का पुरस्कार दरीबा स्मेल्टिंग कॉम्प्लेक्स के हेड टेक्नोलॉजिकल सेल एए गहरवार एवं हेड मेकेनिकल संजीव राजू ने ग्रहण किया।

जिंक़ के मुख्य कार्यकारी अधिकारी सुनील दुग्गल ने कहा कि इन प्रतिष्ठित पुरस्कारों को प्राप्त कर हम गौरवान्वित हैं। इसके लिए हम सभी के आभारी है जिन्होंने इस सफलता तक पहुंचने के लिए हमारा साथ दिया है। ये पुरस्कार हिन्दुस्तान जिंक़ को जिम्मेदार कार्पोरेट के रूप में प्रतिनिधित्व करने के लिए मजबूत प्रेरणा और अच्छे प्रदर्शन के लिए हमें उर्जा प्रदान करेगा।

सीआईआई आटीसी अवार्ड सबसे विश्वसनीय स्थायित्व पुरस्कार है यह पुरस्कार उन कंपनीयों को मान्यता देता है जिसने अपने व्यवसाय में सस्टेनेबिलिटी को सफलतापूर्वक शामिल कर उत्कृष्ट नीति, तौर तरिकों और परिणाम दिये है। सीआईआई प्रमाणित स्थिरता निर्धारण के लिए प्रत्येक छह माह की अवधि में मूल्यांकन किया जाता है जिसमें जलवायु परिवर्तन रणनीतियों, प्राकृतिक संसाधन खपत, मानव संसाधन विकास, सामाजिक उत्तरदायित्व सहीत विभिन्न मापदण्ड सम्मिलित है।

हिन्दुस्तान जिंक़ के हेड-कार्पोरेट कम्यूनिकेशन पवन कौशिक ने बताया कि यह पुरस्कार कम्पनी के कार्यों की कार्पोरेट उत्कृष्टता, पर्यावरण एवं सीएसआर के लिए मान्यता है जिसके लिए हम सतत् प्रयत्नशील हैं।

हार्दिक शोक संवेदना

रतनलाल पीतलिया

भीण्डर निवासी रतनलाल पीतलिया का गत माह निधन हो गया। श्री रतनलाल ने शिक्षा-सेवा से निवृत्त हो समाज-सेवा की राह पकड़ी। धार्मिक जीवन पद्धति और जैन संस्कारों में पले पीतलियाजी का जीवन अत्यन्त सादा था। सामाजिक सरोकारों के निर्वाह में वे सदैव आगे रहते थे। वर्षों से वे अपने सुपुत्रों के साथ इन्दौर रह रहे थे।

ललित जारोली

कानोड़ निवासी ललितकुमार जारोली का 20 नवम्बर को निधन हो गया। वे वर्षों से उदयपुर में निवासरत थे। प्रारंभ से ही कुशाग्र ललित जारोली ने पढ़ाई के दौरान सौ वर्षीय कलैण्डर बनाया जिसकी सर्वत्र सराहना हुई। श्री ललित संवेदनशील तथा भावुक हृदय के थे। कानोड़ में प्राचीन आदेश्वर मन्दिर के जीर्णोद्धार में वे वर्षों से लगे हुए थे। उसे आधुनिक स्वरूप देते वहां उन्होंने धर्मशाला आदि का भी निमार्ण कराया।

नरेन्द्र अलावत

4 दिसम्बर को कानोड़ निवासी 65 वर्षीय श्री नरेन्द्र अलावत का निधन हो गया। प्रारंभिक शिक्षा स्थानीय जवाहर विद्यापीठ में ली तदनन्तर एम. कॉम., एल. एल. बी. तथा लेबर लॉ में डिप्लोमा किया। वर्षों से उदयपुर में रह रहे थे। उनके अग्रज डॉ. भरतराज ने बताया कि नरेन्द्र बहुमुखी प्रतिभा के धनी, सरल, सौम्य प्रकृति के थे। उन्होंने अनेक संस्थाओं में एकाउन्ट्स का कार्य किया। वर्तमान में वे पेसिफिक मेडीकल कॉलेज में सेवारत थे। उनके पीछे पत्नी अलका, पुत्र चिराग एवं पुत्री खुशबू आदर्श परिवारी हैं।

सोहनलाल धींग

जवाहर विद्यापीठ कानोड़ के संचालक सोहनलाल धींग का 9 दिसम्बर को निधन हो गया। श्री धींग ने वहीं अपनी प्रारम्भिक शिक्षा ग्रहण की और वहीं अंग्रेजी के व्याख्याता बने। बाद में संचालक बन गये। वे बड़े मृदुभाषी, सरल चित्त के सुव्यवहारी तथा प्रबन्धपटु थे।

उपरोक्त सभी दिवंगतों को शब्द रंजन की शोक विव्हल श्रद्धांजलि।

खोजी पत्रकारिता के लिए 'सत्यमेव जयते' एवं फौज के लिए 'राष्ट्र गौरव' पुरस्कार की घोषणा

पत्रकारिता का जीवंत दस्तावेज है जारोदय : प्रो. सारंगदेवोत

- जार उदयपुर की ओर से प्रकाशित 'जारोदय-2018' स्मारिका विमोचित

उदयपुर। राजस्थान विद्यापीठ डीम्ड टू बी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. एस. एस. सारंगदेवोत ने कहा कि विद्यापीठ विश्वविद्यालय शीघ्र ही दो श्रेणियों में पुरस्कार देगा। इसमें सेना के तीनों विंग में श्रेष्ठ कार्य पर 'राष्ट्र गौरव' पुरस्कार व खोजी पत्रकारिता के लिए 'सत्यमेव जयते' पुरस्कार दिये जायेंगे। ये विचार प्रो. सारंगदेवोत ने प्रतापनगर स्थित सभागार में जर्नलिस्ट एसोसिएशन ऑफ राजस्थान (जार) उदयपुर की स्मारिका जारोदय-2018 के विमोचन अवसर पर व्यक्त किए। इस अवसर पर डॉ. तुक्तक भानावत, सुमित गोयल, डॉ. रविकुमार शर्मा, कपिल श्रीमाली, विद्यापीठ के विशेषाधिकारी डॉ. हेमशंकर दाधीच, डॉ. घनश्यामसिंह भीण्डर, कृष्णकांत कुमावत, पवन खाब्या, विपिन गांधी, एम. एल. जैन, विकास बोकाड़िया, अजयकुमार आचार्य, संजय व्यास, राजेन्द्र हिलोरिया, अनिल जैन, अल्पेश लोढ़ा, भूपेन्द्रकुमार चौबीसा, भूपेश दाधीच, महेश व्यास, अब्बुल अजीज राजु सहित कार्यकारिणी के पदाधिकारी उपस्थित थे।

कुलपति ने कहा कि जारोदय स्मारिका अपने समय का पत्रकारिता का जीवंत दस्तावेज है। इसमें समाहित किए गए सभी आलेख पत्रकारिता की दशा और दिशा तथा भविष्य की संभावनाओं के बारे में बताते ही हैं, एक अंतरदृष्टि भी पाठक को प्रदान करते हैं। समाचार पत्रों की सूची, शहर के प्रमुख टेलीफोन नंबर्स, मेवाड़ से प्रकाशित पत्र-पत्रिकाओं की सूची आदि ने इसकी उपयोगिता बढ़ा दी है। इस प्रकार का प्रयोग सचमुच बहुत अनूठा है व इसके लिए जार टीम बधाई की पात्र है। उन्होंने संकलनकर्ताओं, संपादकों तथा इस कार्य से जुड़ी जार टीम का साधुवाद भी किया। इससे पूर्व वरिष्ठ पत्रकार सुमित गोयल, डॉ. रविकुमार शर्मा, कपिल श्रीमाली, विपिन गांधी ने कुलपति प्रो. सारंगदेवोत का माला, उपरणा, शॉल एवं पगड़ी पहना कर स्वागत किया।

जारोदय के संपादक डॉ तुक्तक भानावत ने कहा कि 324 पृष्ठीय बहुरंगीय स्मारिका में विभिन्न कलमकारों के 47 लेखों को शामिल किया गया है। सभी लेख शोधपरक व विचारोत्तेजक हैं। विविधायन में विज्ञापन दर्शन, जार सदस्यों की सूची, समाचार चैनल, पत्र-पत्रिकाओं की सूची, प्रशासनिक टेलीफोन नंबर्स, नगर निगम सभापति व पार्षदगणों का संपूर्ण ब्यौरा व दूरभाष नंबर, जिले के सांसद व विधायकों के नंबर आदि शामिल किए गए हैं। माननीय राज्यपाल महोदय कल्याणसिंहजी, मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे, पूर्व मुख्यमंत्री अशोक गहलोत, गृहमंत्री गुलाबचंद कटारिया, विधानसभा अध्यक्ष कैलाश मेघवाल सहित अन्य की ओर से भेजे गए शुभकामना संदेशों को भी प्रकाशित किया गया है। जार इकाई उदयपुर की विभिन्न गतिविधियों का भी सचित्र लेखांकन किया गया है। डॉ. भानावत ने समस्त विज्ञापनदाताओं का भी धन्यवाद ज्ञापित किया करते कहा कि उनके सहयोग से ही यह महायज्ञ पूर्ण हो सका है।

पं. शीलव्रत शर्मा और मेरी पहली कविता

सन् 1949-50 में मैं अपनी जन्म स्थली कानोड़ में चौथी कक्षा का छात्र था। पं. उदय जैन के जवाहर विद्यापीठ में तब वहीं के प्रेमशंकरजी शर्मा, मीठूलालजी लसोड़, मांगीलालजी मल्हारा पढड़ाते थे।

उन्हीं के साथ पं. शीलव्रतजी शर्मा थे जो साहित्यिक अभिरूचि वाले अच्छे कवि थे। हमारी क्लास में हम दो-तीन ही साहित्यिक रूचि वाले छात्र थे। हर शनिवार को साप्ताहिक सभा होती जिसमें कोई न कोई रचना सुनानी होती थी। मुझे अभी भी याद है, मेरी पहली रचना बॉलीबॉल पर थी। इस खेल का मैं भी दर्शक हुआ करता था। उस दिन मैंने इसी पर एक कविता लिख सुना दी।

सभा पूर्व पं. शीलव्रतजी कुछ छात्रों से कक्षा में पता लगा लेते कि कौन-कौन क्या-क्या सुनायेगा? मुझे वह पूरी कविता तो याद नहीं पड़ती पर जो पंक्तियां याद रह गईं वे थीं-

आई बोलीबाल धमाके की, तुम ही तुम तो खेलाते रहे।
देखन को हम देख रहे, तब कैसे सब मुस्काते रहे।।

गुरुजी ने मेरी कविता की प्रशंसा की और अलग से बुलाकर कहा, इसको ऐसे कर दो, अधिक अच्छी बन जायेगी और बोलने का भी तरीका बताया। तब कविता बनी-

आई बोलीबाल विचित्र कहु, तुम ही तुमतो खेलाते रहे।
देखन को सब देख रहे पर मीठू मन मुस्काते रहे।।

खूब तालियां बजीं और उस दिन से मैं पूरे स्कूल का कवि बन गया। तब मेरा नाम मीठू था और भाई साहब का नाथू। जब नाथूराम गोडसे ने गांधीजी की हत्या कर दी तो उन्होंने अपना नाम नाथू से नरेन्द्र और मेरा नाम मीठू से महेन्द्र रख दिया।

वहां दसूंदियों के मोहल्ले में गुरुजी का पेतृक मकान था। वहीं उनके ठीक पास में मेरी बड़ी बहिन रहने लगी। पिताजी का निधन हो चुका था। माताजी वणज के लिए जब गामड़े जाती तो मैं जीजां के वहीं रहता। गुरुजी के पिता गहरीलालजी आशु रचनाकार थे। माता लहरीबाई सबसे हेलमेल रखती सो हमारा उनके वहां आना-जाना होता रहा।

31 अगस्त 1928 को जन्मे गुरुजी के बड़े भाई संन्यासी बन स्वामी कृष्णानंद सरस्वती हो गये। मेवाड़ में आजादी का शंखनाद गांवों में सर्वाधिक कानोड़ में हुआ। यहीं सन् 1942 के आंदोलन में गुरुजी जेल में रहे। जून 1947 में वे उदयपुर आ गए और बीजलीघर पॉवर हाऊस में नौकरी कर ली। मेवाड़ इलेक्ट्रिक बोर्ड को सर्वेसर्वा कर्नाटक के डारे साहब थे। गुरुजी के बुद्धि-कौशल, प्रशासनिक क्षमता, पारदर्शी कार्यप्रणाली और व्यावहारिक सर्वप्रियता से डोरे साहब उनके अनन्य बन गये तो गुरुजी ने भी अपनी आत्मीयता और पारिवारिकता का ऐसा सेतु बनाया कि सन् 1970 में जो नई बस्ती निर्मित हुई उसका नाम ही डोरेनगर रख दिया।

गुरुजी पुरानी चाल की छन्दीय कविता के सुजस कवि हैं। महकते मोती, आराध्य स्मृति, दर्पण, पुरुषार्थ के पथ पर चाणक्य, मंगल पाण्डे, अटलबिहारी वाजपेयी पर काव्य कृतियां तैयार की हैं। लोकदेवता कल्लाजी राठौड़ पर लिखी उनकी कल्ला वाचनी भक्त-समुदाय में सर्वाधिक चर्चित बनी हुई है।

28 नवम्बर 2018 को डोरेनगर में उनके आराध्य स्मृति निवास में मैंने उनसे भेंट की तो पाया कि 91 वर्ष की अवस्था लिए गुरुजी अब कम सुन पाते हैं। कभीकभाक स्मृति विहीन हो जाते हैं। अधिक बैठने बोलेन की क्षमता भी नहीं रही किन्तु उनके तीन सपूतों में कैलाशजी और उनका पूरा परिवार सबकुछ छोड़कर गुरुजी की सेवा-चाकरी में समर्पण लिए सरवण पूत सा न्यौछावर है।

- म. भा.

भजनों में बवाड़ूं संतों री अमरबेल

-स्वामी खुशालनाथ 'धीर'-

हेली, फकीरी, सोरठ, प्रभाती भजन-वाणी गायकी का परम्परागत स्वरूप अब प्राय: लुप्त होने के कगार पर है। भजन संध्या व रात्रि जागरण का मंचीयकरण नौटंकी सा बन गया है। नाच-गान को भाण्ड प्रदर्शन, भजन संध्या को सत्संग के नाम पर अब मनोरंजन का मीठा जहर पिलाया जा रहा है। यह सब देख, सुन कर परम्परागत सत्संग में वाणी भजन गायकी का वीणा, तम्बूरा, खड़ताल, ढोलक, मजीरा, कांसा व चिमटा वादन से जो सहज रस बरसता था वह अनुपम सुख देता था।

भजन तो भीजन ही है। जो जन-जन द्वारा भजा जाय वह भजन है। साधु-सन्तों की वाणी उनके भजन हैं। राजस्थान में रात्रि-जागरण का अपना एक अलग महत्व है। गांव क लोग रात में एक स्थान पर बैठ कर भक्तों के भजन, सन्तों के सबद और गुरु महिमा के भजन गाते हैं। राजा भरथरी का एक लोकप्रिय भजन है जिसमें वे कहते हैं- 'भजनों में बवाड़ूं सन्तों री अमरबेल।'

परम्परागत भजन मण्डली और आधुनिक मंचीय भजन पार्टी में रात-दिन का अन्तर आ गया है। पहले भजन मण्डली गैर व्यावसायिक थी। आजकल की व्यावसायिक भजन मण्डलियों में सत्संग कम व प्रदर्शन ज्यादा होता है। यह मात्र मनोरंजन देता है, भक्ति-भाव नहीं। पूर्व में भजन मण्डली के लोग भाविकों के आमंत्रण पर निशुल्क रात्रि-जागरण व भजन सत्संग संध्या में भजन गाते थे। प्रत्येक पद का अर्थावणी सहित गूढ़ार्थ ज्ञान कराया जाता था। प्रभाती व प्रात:कालीन मंगला आरती के बाद ही रात्रि-जागरण पूरा होता था। भजन गायक आपस में पीले चावल देकर वादक (सन्देश वाहक) का कार्य करते थे। इससे भजन मण्डली को सन्देश मिल जाता था। सभी घेरे में बैठकर भजन गाते व सुनते थे। अब यह परम्परा लुप्त सी हो रही है।

स्वत्वाधिकारी प्रकाशक डॉ. तुक्तक भानावत द्वारा 352, कृष्णपुरा, सेंटपॉल स्कूल के पास, उदयपुर - 313001 (राज.) से प्रकाशित एवं मुद्रक लोकेश कुमार आचार्य द्वारा मैसर्स पुकार प्रिंटिंग प्रेस 311-ए, चित्रकूट नगर, भुवाणा, उदयपुर (राज.) से मुद्रित। सम्पादक : रंजना भानावत। फोन : 0294-2429291, मोबाइल - 9414165391, Email : shabdranjanudr@gmail.com, drtuktakbhanawat@gmail.com, सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।